8 डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम

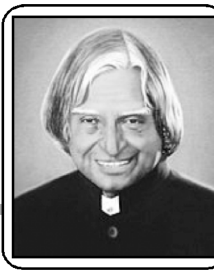

लेखक : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—सन् 1931 ई०।
- **प्रसिद्धि**—मिसाइलमैन एवं जनता के राष्ट्रपति।
- **पिता**—जैनुलाब्दीन।
- **माता**—अशिअम्मा।
- **शिक्षा :** इंजीनियरिंग।
- **लेखन विधा :** काव्य, आत्मकथा, विज्ञान।
- **भाषा :** सरल, प्रवाहमय, बोधगम्य।
- **शैली** : चिन्तनपरक, आत्मकथात्मक।
- **प्रमुख रचनाएँ**—इग्नाटिड माइंड्स : अनलीशिंग द पावर विदिन इण्डिया, माय जर्नी आदि।
- **मृत्यु**—27 जुलाई, सन् 2015 ई०।

मिसाइलमैन एवं जनता के राष्ट्रपति के रूप में प्रसिद्ध डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम का पूरा नाम अबुल पाकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम है। कलाम का जन्म 15 अक्टूबर, 1931 ई० को धनुषकोडी गाँव, रामेश्वरम् तमिलनाडु में हुआ था। इनके पिता जैनुलाब्दीन एक नौका मालिक एवं मछुआरे थे। इनकी माँ का नाम अशिअम्मा था। कलाम जी अपने पाँच भाई-बहनों में सबसे छोटे थे।

कलाम जी के घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। इसलिए वह पढ़ाई करने के साथ-साथ काम भी करते थे। वह अपनी स्कूली शिक्षा की जरूरत पूरी करने के लिए हर दिन अखबार बेचकर पैसा कमाते थे। इन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा रामनाथपुरम के एक मैट्रीकुलेशन स्कूल से पूरी की और स्नातक की पढ़ाई सेण्ट जोसेफ कॉलेज तिरुचिरापल्ली से पूरी की। उसके बाद इन्होंने प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास से 1960 ई० में अंतरिक्ष इंजीनियरिंग की शिक्षा पूरी की। इनकी विद्वत्ता से प्रभावित होकर इन्हें 'डॉक्टर' की मानद् उपाधि दी गयी। 27 जुलाई, 2015 ई० को भारतीय प्रबंधन संस्थान शिलांग, मेघालय में एक व्याख्यान के दौरान हृदयाघात से उनकी मृत्यु हो गयी। भले ही वे आज इस संसार में नहीं हैं किन्तु उन्होंने भारत को जो सफलता और ऊँचाई दी है उसको पूरा देश ही नहीं विश्व सदा याद रखेगा।

कलाम जी अविवाहित थे। अपनी शिक्षा पूरी करने के पश्चात् रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) से वैज्ञानिक के रूप में जुड़े। प्रारम्भ में इन्होंने छोटे हेलीकाप्टर डिजाइन करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। अंतरिक्ष अनुसंधान के लिए भारतीय राष्ट्रीय समिति का हिस्सा होने के कारण इन्हें भारत के महान् वैज्ञानिक विक्रम अम्बालाल साराभाई जैसे लोगों के साथ काम करने का मौका मिला।

1969 ई० में इन्हें भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) भेज दिया गया जहाँ इन्होंने परियोजना निदेशक के रूप में कार्य किया। इन्होंने पहला उपग्रह प्रक्षेपण यान और ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान को बनाने में अपना विशेष योगदान दिया और यह प्रक्षेपण बाद में सफल हुआ।

1980 ई० में भारत सरकार ने एक आधुनिक मिसाइल प्रोग्राम अब्दुल कलाम के निर्देशन में शुरू करने का विचार किया और इस कार्य के लिए इन्हें दोबारा DRDO में भेजा। इसके बाद एकीकृत निर्देशित मिसाइल कार्यक्रम कलाम जी के मुख्य कार्यकारी के रूप में शुरू किया गया। अब्दुल कलाम के निर्देशन में ही अग्नि मिसाइल, पृथ्वी जैसे मिसाइल का बनना सफल हुआ। कलाम जी 2002 ई० में भारत के 11वें राष्ट्रपति के रूप में निर्वाचित हुए। इन्होंने दूसरी बार राष्ट्रपति का चुनाव लड़ने से मना कर दिया और 25 जुलाई, 2007 ई० को अपना राष्ट्रपति पद छोड़ दिया।

कलाम जी ने निम्नलिखित पुस्तकों की रचना की–

(i) India 2020 : A Vision for the New Millennium (1998)

(ii) Wings of Fire : An Autobiography (1999)

(iii) अग्नि की उड़ान (हिन्दी) (1999)

(iv) Ignited Minds : Unleashing the Power Within Indian (2002)

(v) आरोहण–प्रमुख स्वामी जी के साथ मेरा आध्यात्मिक सफर।

डॉ0 कलाम को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया—

- पद्म भूषण (1981)
- पद्म विभूषण (1990)
- भारत रत्न (1997)
- वान ब्राउन अवार्ड (2013)

कलाम जी के उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि कलाम जी विलक्षण प्रतिभा वाले व्यक्ति थे। ये भारत के उच्चकोटि के वैज्ञानिक, लोकप्रिय राष्ट्रपति, दार्शनिक एवं समाज सेवी थे। ये मानवता के पुजारी एवं भारतीय युवाओं के हृदय सम्राट थे। कलाम जी का सम्पूर्ण जीवन पूरे विश्व के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। आज कलाम जी भले ही जीवित न हों किन्तु अपने कार्यों द्वारा सम्पूर्ण विश्व में अपनी अमिट छाप छोड़ गये हैं।

हम और हमारा आदर्श

(तेजस्वी मन के सम्पादित अंश)

मैं खासतौर से युवा छात्रों से ही क्यों मिलता हूँ? इस सवाल का जवाब तलाशते हुए मैं अपने छात्र जीवन के दिनों के बारे में सोचने लगा। रामेश्वरम् के द्वीप से बाहर निकलकर यह कितनी लंबी यात्रा रही। पीछे मुड़कर देखता हूँ तो विश्वास नहीं होता। आखिर वह क्या था जिसके कारण यह संभव हो सका? महत्त्वाकांक्षा? कई बातें मेरे दिमाग में आती हैं। मेरा ख्याल है कि सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह रही कि मैंने अपने योगदान के मुताबिक ही अपना मूल्य आँका। बुनियादी बात जो आपको समझनी चाहिए वह यह है कि आप जीवन की अच्छी चीजों को पाने का हक रखते हैं, उनका जो ईश्वर की दी हुई हैं। जब तक हमारे विद्यार्थियों और युवाओं को यह भरोसा नहीं होगा कि वे विकसित भारत के नागरिक बनने के योग्य हैं तब तक वे जिम्मेदार और ज्ञानवान् नागरिक भी कैसे बन सकेंगे।

विकसित देशों की समृद्धि के पीछे कोई रहस्य नहीं छिपा है। ऐतिहासिक तथ्य बस इतना है कि इन राष्ट्रों– जिन्हें जी-8 के नाम से पुकारा जाता है– के लोगों ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी इस विश्वास को पुख्ता किया कि मजबूत और समृद्ध देश में उन्हें अच्छा जीवन बिताना है। तब सच्चाई उनकी आकांक्षाओं के अनुरूप ढल गई।

मैं यह नहीं मानता कि समृद्धि और अध्यात्म एक-दूसरे के विरोधी हैं या भौतिक वस्तुओं की इच्छा रखना कोई गलत सोच है। उदाहरण के तौर पर, मैं खुद न्यूनतम वस्तुओं का भोग करते हुए जीवन बिता रहा हूँ, लेकिन मैं सर्वत्र समृद्धि की कद्र करता हूँ, क्योंकि समृद्धि अपने साथ सुरक्षा तथा विश्वास लाती है, जो अंततः हमारी आजादी को बनाए रखने में सहायक हैं। आप अपने आस-पास देखेंगे तो पाएँगे कि खुद प्रकृति भी कोई काम आधे-अधूरे मन से नहीं करती। किसी बगीचे में जाइए। मौसम में आपको फूलों की बहार देखने को मिलेगी। अथवा ऊपर की तरफ ही देखें, यह ब्रह्माण्ड आपके अनंत तक फैला दिखाई देगा, आपके यकीन से भी परे।

जो कुछ भी हम इस संसार में देखते हैं वह ऊर्जा का ही स्वरूप है। जैसा कि महर्षि अरविंद ने कहा है कि हम भी ऊर्जा के ही अंश हैं। इसलिए जब हमने यह जान लिया है कि आत्मा और पदार्थ दोनों ही अस्तित्व का हिस्सा हैं, वे एक-दूसरे से पूरा तादात्म्य रखे हुए हैं तो हमें यह एहसास भी होगा कि भौतिक पदार्थों की इच्छा रखना किसी भी दृष्टिकोण से शर्मनाक या गैर-आध्यात्मिक बात नहीं है।

इसके बावजूद अकसर हमें यही विश्वास दिलाया जाता है। न्यूनतम में गुजारा करने और जीवन बिताने में भी निश्चित रूप से कोई हर्ज नहीं है। महात्मा गाँधी ने ऐसा ही जीवन जिया था, लेकिन जैसा कि उनके साथ था, आपके मामले में भी यह आपकी पसंद पर निर्भर करता है। आपकी ऐसी जीवन-शैली इसलिए है क्योंकि इससे वे तमाम जरूरतें पूरी होती हैं जो आपके भीतर की गहराइयों से उपजी होती हैं। लेकिन त्याग की प्रतिमूर्ति बनना और जोर–जबरदस्ती से चुनना-सहने का गुणगान करना-अलग बातें हैं। हमारी युवा शक्ति से सम्पर्क कायम करने के मेरे फैसले का आधार भी यही रहा है। उनके सपनों को जानना और उन्हें बताना कि अच्छे, भरे-पूरे और सुख-सुविधाओं से पूर्ण जीवन के सपने देखना तथा फिर उस स्वर्णिम युग के लिए काम करना सही है। आप जो कुछ भी करें वह आपके हृदय से किया गया हो, अपनी आत्मा को अभिव्यक्ति दें और इस तरह आप अपने आस-पास प्यार तथा खुशियों का प्रसार कर सकेंगे।

शब्दार्थ

खासतौर से = विशेष रूप से। **तलाशते हुए** = ढूँढ़ते हुए। **दिमाग** = मस्तिष्क। **आँका** = जाँचा-परखा। **हक** = अधिकार। **समृद्धि** = सम्पन्नता। **न्यूनतम** = कम से कम। **आधे-अधूरे मन से** = बेमन से। **सर्वत्र** = सब जगह। **कद्र करना** = सम्मान

करना। **आजादी** = स्वतन्त्रता। **यकीन** = विश्वास। **ऊर्जा** = शक्ति। **अंश** = भाग। **एहसास** = महसूस। **हर्ज** = परेशानी। **प्रसार** = विस्तार। **महत्वाकांक्षा** = उन्नति को प्राप्त करने की इच्छा। **मुताबिक** = अनुसार। **बुनियादी** = प्रारंभिक, आधार स्वरूप। **जिम्मेदार** = अपने दायित्व को निभाने वाला। **तादात्म्य** = अभिन्नता। **एहसास** = ध्यान, अनुभव। **अभिव्यक्ति** = प्रकट। **खासतौर** = विशेष रूप से। **ख्याल** = विचार। **तथ्य** = वास्तविकता। **पुख्ता** = दृढ़, मजबूत। **अध्यात्म** = आत्मा-परमात्मा सम्बन्धी ज्ञान। **सर्वत्र** = सब जगह। **अनन्त** = जिसका अन्त न हो। **गुजारा करना** = जीवन-निर्वाह करना। **जीवन-शैली** = जीवन जीने का ढंग। **तमाम** = समस्त। **सम्पर्क कायम करना** = संपर्क स्थापित करना। **फैसला** = निर्णय।

अभ्यास प्रश्न

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित गद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) मैं यह नहीं मानता कि समृद्धि और अध्यात्म एक-दूसरे के विरोधी हैं या भौतिक वस्तुओं की इच्छा रखना कोई गलत सोच है। उदाहरण के तौर पर, मैं खुद न्यूनतम वस्तुओं का भोग करते हुए जीवन बिता रहा हूँ, लेकिन मैं सर्वत्र समृद्धि की कद्र करता हूँ, क्योंकि समृद्धि अपने साथ सुरक्षा तथा विश्वास लाती है, जो अंततः हमारी आजादी को बनाए रखने में सहायक हैं। आप अपने आस-पास देखेंगे तो पाएँगे कि खुद प्रकृति भी कोई काम आधे-अधूरे मन से नहीं करती। किसी बगीचे में जाइए। मौसम में आपको फूलों की बहार देखने को मिलेगी। अथवा ऊपर की तरफ ही देखें, यह ब्रह्माण्ड आपके अनंत तक फैला दिखाई देगा, आपके यकीन से भी परे। **[2019 CO, CS]**

प्रश्न– (i) पाठ का शीर्षक और लेखक का नाम लिखिए।
(ii) लेखक समृद्धि और अध्यात्म को आपस में विरोधी क्यों नहीं मानता?
(iii) समृद्धि से हमें क्या लाभ मिलता है?
(iv) प्रकृति का कोई काम पूर्ण मनोयोग से होता है; इसका आशय स्पष्ट कीजिए।
(v) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(vi) 'न्यूनतम' और 'अनन्त' का क्या अर्थ है?

(ख) जो कुछ भी हम इस संसार में देखते हैं वह ऊर्जा का ही स्वरूप है। जैसा कि महर्षि अरविंद ने कहा है कि हम भी ऊर्जा के ही अंश हैं। इसलिए जब हमने यह जान लिया है कि आत्मा और पदार्थ दोनों ही अस्तित्व का हिस्सा हैं, वे एक-दूसरे से पूरा तादात्म्य रखे हुए हैं तो हमें यह एहसास भी होगा कि भौतिक पदार्थों की इच्छा रखना किसी भी दृष्टिकोण से शर्मनाक या गैर-आध्यात्मिक बात नहीं है। **[2020 ZF, ZN]**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।
(ii) लेखक ने अस्तित्व का हिस्सा किसे माना है?
(iii) प्रस्तुत गद्यांश का क्या प्रसंग है?
(iv) प्रस्तुत गद्यांश लेखक के किस सम्पादित पुस्तक का अंश है?
(v) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(vi) जो कुछ भी हम इस संसार में देखते हैं वह किसका स्वरूप है?
(vii) महर्षि अरविन्द ने अस्तित्व का हिस्सा किसको माना है?
(viii) गद्यांश के आधार पर तादात्म्य का आशय स्पष्ट कीजिए।
(ix) कैसी इच्छा रखना शर्मनाक या और आध्यात्मिक बात नहीं है?
(x) महर्षि अरविन्द ने क्या कहा?

(xi) हम इस संसार में जो कुछ देखते हैं वह क्या है?

(xii) अस्तित्व और तादात्म्य शब्दों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(ग) न्यूनतम में गुजारा करने और जीवन बिताने में भी निश्चित रूप से कोई हर्ज नहीं है। महात्मा गाँधी ने ऐसा ही जीवन जिया था, लेकिन जैसा कि उनके साथ था, आपके मामले में भी यह आपकी पसन्द पर निर्भर करता है। आपकी ऐसी जीवन-शैली इसलिए है, क्योंकि इससे वे तमाम जरूरतें पूरी होती हैं, जो आपके भीतर की गहराइयों से उपजी होती हैं, लेकिन त्याग की प्रतिमूर्ति बनना और जोर-जबरदस्ती से चुनना-सहने का गुणगान करना अलग बातें हैं।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

अथवा उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) मनुष्य को सदैव किस प्रकार की जीवन-शैली अपनानी चाहिए?

(iv) लेखक महात्मा गाँधी के जीवन का उदाहरण देकर क्या स्पष्ट करना चाहता है?

(v) लेखक के अनुसार किस प्रकार का जीवन व्यतीत करने में परेशानी नहीं है?

(घ) विकसित देशों की समृद्धि के पीछे कोई रहस्य नहीं छिपा है। ऐतिहासिक तथ्य बस इतना है कि इन राष्ट्रों–जिन्हें जी-8 के नाम से पुकारा जाता है–के लोगों ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी इस विश्वास को पुख्ता किया कि मजबूत और समृद्ध देश में उन्हें अच्छा जीवन बिताना है। तब सच्चाई उनकी आकांक्षाओं के अनुरूप ढल गयी।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) जी-8 के देशों के लोगों ने किस विश्वास को मजबूत किया।

(iv) जी-8 के नाम से किसे पुकारा जाता है?

(v) किसकी समृद्धि के पीछे कोई रहस्य नहीं छिपा है?

(ङ) हमारी युवा शक्ति से सम्पर्क कायम करने के मेरे फैसले का आधार भी यही रहा है। उनके सपनों को जानना और उन्हें बताना कि अच्छे, भरे-पूरे और सुख-सुविधाओं से पूर्ण जीवन के सपने देखना तथा फिर उस स्वर्णिम युग के लिए काम करना सही है। आप जो कुछ भी करें वह आपके हृदय से किया गया हो, अपनी आत्मा को अभिव्यक्ति दें और इस तरह आप अपने आस-पास प्यार तथा खुशियों का प्रसार कर सकेंगे।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) हम अपने आस-पास प्यार तथा खुशियों का प्रसार कब कर सकेंगे?

(iv) स्वर्णिम युग के लिए कार्य करना कब सही है?

(v) लेखक का युवा शक्ति से सम्पर्क कायम करने के फैसले का आधार क्या रहा है?

(च) आखिर वह क्या था, जिसके कारण यह सम्भव हो सका? महत्त्वाकांक्षा? कई बातें मेरे दिमाग में आती हैं। मेरा ख्याल है कि सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह रही कि मैंने अपने योगदान के मुताबिक ही अपना मूल्य आँका। बुनियादी बात जो आपको समझनी चाहिए, वह यह है कि आप जीवन की अच्छी चीजों को पाने का हक रखते हैं, उनका जो ईश्वर की दी हुई हैं। जब तक हमारे विद्यार्थियों और युवाओं को यह भरोसा नहीं होगा कि वे विकसित भारत के नागरिक बनने के योग्य हैं, तब तक वे जिम्मेदार और ज्ञानवान नागरिक भी कैसे बन सकेंगे।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) युवा छात्र जिम्मेदार और ज्ञानवान नागरिक कब तक नहीं बन सकेंगे?

(iv) लेखक युवा छात्रों को कौन-सी प्रमुख बात सीखने के लिए कहता है?

(v) लेखक के अनुसार विद्यार्थियों और युवाओं को किस बात पर भरोसा होना चाहिए?

(छ) मैं खासतौर से युवा छात्रों से ही क्यों मिलता हूँ? इस सवाल का जवाब तलाशते हुए मैं अपने छात्र जीवन के दिनों के बारे में सोचने लगा। रामेश्वरम् के द्वीप से बाहर निकलकर यह कितनी लंबी यात्रा रही। पीछे मुड़कर देखता हूँ तो विश्वास नहीं होता। आखिर वह क्या था जिसके कारण यह संभव हो सका? महत्त्वाकांक्षा? कई बातें मेरे दिमाग में आती हैं। मेरा ख्याल है कि सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह रही कि मैंने अपने योगदान के मुताबिक ही अपना मूल्य आँका। बुनियादी बात जो आपको समझनी चाहिए वह यह है कि आप जीवन की अच्छी चीजों को पाने का हक रखते हैं, उनका जो ईश्वर की दी हुई हैं। जब तक हमारे विद्यार्थियों और युवाओं को यह भरोसा नहीं होगा कि वे विकसित भारत के नागरिक बनने के योग्य हैं तब तक वे जिम्मेदार और ज्ञानवान् नागरिक भी कैसे बन सकेंगे। **[2019 CT]**

(i) लेखक युवा छात्रों से ही क्यों मिलता है?
(ii) आप किन चीजों के पाने का हक रखते हैं?
(iii) उक्त पंक्तियों से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?
(iv) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(v) पाठ का शीर्षक और लेखक का नाम लिखिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम का संक्षिप्त जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **[2019 CL, CP, CR]**
2. निम्नलिखित शीर्षकों के आधार पर डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम का परिचय दीजिए—
   (i) जीवन-परिचय,
   (ii) प्रमुख रचनाएँ।
3. ए० पी० जे० अब्दुल कलाम का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए। **[2020 ZM]**
4. 'हम और हमारा आदर्श' पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
5. निम्नलिखित सूक्तियों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए—
   (क) मैं यह नहीं मानता कि समृद्धि और अध्यात्म एक-दूसरे के विरोधी हैं।
   (ख) जो कुछ भी हम इस संसार में देखते हैं वह ऊर्जा का ही स्वरूप है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम का देश के लिए क्या योगदान है?
2. अब्दुल कलाम की रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
3. अब्दुल कलाम का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
4. अब्दुल कलाम का निधन कब हुआ था?
5. अब्दुल कलाम के परिवार का मुख्य व्यवसाय क्या था?
6. "विकसित देशों की समृद्धि के पीछे कोई रहस्य नहीं छिपा है।" कलाम जी के कहने का क्या अभिप्राय है?
7. ऊर्जा का स्वरूप बताइए।

खण्ड–'क'

गद्य

यह संकलन

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश द्वारा निर्धारित नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार कक्षा-12 के छात्र-छात्राओं के लिए हिन्दी विषय की अनिवार्य पाठ्य-पुस्तक के रूप में 'गद्य' का प्रणयन किया गया है। इस पुस्तक का प्रणयन करते समय सभी उद्देश्यों का पूरा ध्यान रखा गया है। इसका **पहला उद्देश्य** यह रहा है कि छात्र-छात्राएँ हिन्दी गद्य के विगत सौ-डेढ़ सौ वर्षों के विकास से पूर्णरूपेण परिचित हो जायँ।

वस्तुतः हिन्दी गद्य से यहाँ तात्पर्य खड़ीबोली गद्य से है जिसका साहित्य में अनवरत् प्रयोग भारतेन्दु से आरम्भ होता है। इसीलिए भारतेन्दु को आधुनिक युग का जनक कहा जाता है। उन्हें ही इस बात का श्रेय है कि वे हिन्दी साहित्य को मध्य युग से निकालकर आधुनिक युग में ले आये। भारतेन्दु-युग में हिन्दी गद्य का स्वरूप स्पष्ट और स्थिर होने लगा। द्विवेदी-युग में वह व्याकरण के नियमों से अनुशासित हुआ। उसका परिष्कार और परिमार्जन हुआ। छायावाद-युग में वह अलंकृत हुआ। उसमें लाक्षणिकता का समावेश हुआ। उसकी अभिव्यंजना शक्ति बढ़ी और वह सूक्ष्म, कोमल भावनाओं तथा सुकुमार एवं रंगीन कल्पना चित्रों को व्यक्त करने में समर्थ हुआ। प्रगतिवादी-युग में ठोस सामाजिक यथार्थ को व्यक्त करने की प्रतिबद्धता के कारण उसमें कुछ परुषता और खरापन आया है और वह जीवन के बाह्य विस्तार को अभिव्यक्ति देने में समर्थ हुआ। इस युग की समाप्ति के साथ ही देश स्वतंत्र हुआ। हमारी आकांक्षाएँ बढ़ीं। हम देश-विदेश की साहित्यिक गतिविधियों से परिचित होने, आधुनिक जीवन के द्वंद्व, तनाव, संकुलता और बुद्धिवादिता को ग्रहण करने और जीवन की दौड़ में आगे बढ़ने के लिए व्यग्र हो उठे। इस पूरे परिवेश को अभिव्यक्ति देने के प्रयत्न में हिन्दी गद्य साहित्य में अनेक विधाओं का विकास हुआ। उसकी शब्द-सम्पदा में वृद्धि हुई। वह आधुनिक जीवन के बाह्य विस्तार को समेटने और आन्तरिक रहस्यों को व्यंजित करने में समर्थ हुआ। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के गद्य से आगे चलकर मोहन राकेश के गद्य तक की यात्रा के क्रम को छात्र-छात्राएँ भूमिका के अन्तर्गत विस्तार से पढ़ सकेंगे।

प्रस्तुत संकलन का **दूसरा उद्देश्य** कक्षा-12 के छात्रों को हिन्दी-गद्य की सभी प्रमुख विधाओं से परिचित कराना है। इसलिए इस संकलन में उन विधाओं को छोड़कर जिनका अध्ययन छात्रों को स्वतंत्र रूप से कराया जायेगा, शेष सभी को प्रतिनिधित्व दिया गया है। संस्मरण, शब्दचित्र, गद्यगीत, रिपोर्ताज, यात्रा-वृत्त आदि निबंधों की परम्परा में विकसित होनेवाली गद्य की अपेक्षाकृत नयी विधाएँ हैं।

इस संकलन का **तीसरा उद्देश्य** निबंधों के सभी प्रकार के रूपों और शैलियों से छात्रों को परिचित कराना है। इसलिए निबंधों का चयन करते समय उनके सभी रूपों को समाविष्ट करने की चेष्टा की गयी है। डॉ0 वासुदेवशरण अग्रवाल गंभीर विद्वान्, मान्य पुरातत्त्वविद् और भारतीय संस्कृति के श्रेष्ठ अध्येता थे। उनका **'राष्ट्र का स्वरूप'** निबंध उनके व्यक्तित्व के अनुरूप है। श्री हरिशंकर परसाई हिन्दी के श्रेष्ठ व्यंग्यकार थे। उनका **'निन्दा रस'** निर्दोष व्यंग्य का अच्छा उदाहरण है।

जैनेन्द्र कुमार गाँधीवादी विचारक थे। वे किसी विषय को लेकर अपनी दृष्टि से विचार करते हुए उसकी तह में पहुँच जाते थे। **'भाग्य और पुरुषार्थ'** निबंध उनकी मौलिक चिन्तन शैली का परिचायक है। डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम एक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक थे। उनके द्वारा लिखा गया 'हम और हमारा आदर्श' एक ज्ञानपरक लेख है। प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी हिन्दीतर प्रदेश के एक कर्मठ, उत्साही एवं निष्ठावान् हिन्दी-प्रेमी विद्वान् हैं। उनके **'भाषा और आधुनिकता'** निबंध में आधुनिक जीवन-दृष्टि का हिन्दी भाषा पर पड़नेवाले प्रभावों का विवेचन किया गया है। यह निबंध भाषा और गतिशील सामाजिक चेतना के सम्बन्धों को स्पष्ट करने के कारण अपना विशेष महत्त्व रखता है। इस प्रकार प्रस्तुत संग्रह में वर्णनात्मक, विवरणात्मक, विचारात्मक, भावात्मक, आत्म-व्यंजक, व्यंग्यात्मक आदि सभी शैलियों का प्रतिनिधित्व करनेवाले निबंध संगृहीत हैं।

छात्रों का मानसिक संस्कार करना, उनके जीवन के प्रति रचनात्मक, स्वस्थ एवं व्यापक दृष्टिकोण विकसित करना, मानवीय भावनाओं एवं मूल्यों के प्रति आस्था उत्पन्न करना तथा राष्ट्र की एकता और अखण्डता की चेतना जागृत करना साहित्य-शिक्षा का लक्ष्य है। इस लक्ष्य की पूर्ति संकलन का **चौथा उद्‌देश्य** है। प्रस्तुत संकलन इस लक्ष्य की पूर्ति में पूर्णतः समर्थ है। निबंधों का चयन करते समय उनमें निहित मन्तव्यों एवं मूल्यों के प्रभाव और उपयोगिता पर भी विचार किया गया है। संकलन के सभी निबंध सुरुचिपूर्ण हैं। उनमें नैतिक एवं रचनात्मक दृष्टि को ही महत्त्व दिया गया है। वे देश की एकता के पोषक एवं व्यापक मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था उत्पन्न करनेवाले हैं।

जीवन के सभी उपादानों और तत्त्वों की भाँति भाषा एवं साहित्य भी गतिशील तत्त्व है। इनका स्वरूप समय एवं युग-प्रवृत्ति के परिवर्तन के साथ बदलता रहता है। इसलिए साहित्य के विद्यार्थी को संस्कारतः आग्रह-मुक्त होना चाहिए। न उसमें प्राचीन के प्रति मोह होना चाहिए और न नवीनता के प्रति आग्रह। प्रस्तुत संकलन में प्राचीन एवं नवीन के संतुलन पर भी ध्यान रखा गया है। हिन्दी भाषा और साहित्य का जो रूप आज है वह पहले नहीं था और आगे भी वह नहीं रहेगा, उसमें विकास और परिष्कार होता आया है और होता रहेगा। हर जीवित भाषा में यह विकास-प्रक्रिया चलती रहती है। इसलिए आज के मानदण्ड को आधार बनाकर भारतेन्दु-कालीन भाषा एवं वर्तनी को सुधारना या बदलना इतिहास के साथ अन्याय करना होगा। साथ ही भविष्य के लिए आज से ही कोई आग्रह बनाकर चलना भी अनुचित होगा।

विश्वास है कि छात्र-छात्राएँ इस पाठ्य-पुस्तक की सहायता से साहित्य और भाषा के प्रति संतुलित दृष्टि विकसित करने में समर्थ होंगे।

●●

भूमिका

गद्य क्या है?–छन्द, ताल, लय एवं तुकबन्दी से मुक्त तथा विचारपूर्ण एवं वाक्यबद्ध रचना को 'गद्य' कहते हैं। गद्य शब्द 'गद्' धातु के साथ 'यत्' प्रत्यय जोड़ने से बनता है। 'गद्' का अर्थ होता है—बोलना, बतलाना या कहना। सामान्यतः दैनिक जीवन में प्रयुक्त होनेवाली बोलचाल की भाषा में गद्य का ही प्रयोग किया जाता है। गद्य का लक्ष्य विचारों या भावों को सहज, सरल एवं सामान्य भाषा में विशेष प्रयोजन सहित संप्रेषित करना है। ज्ञान-विज्ञान से लेकर कथा-साहित्य आदि की अभिव्यक्ति का माध्यम साधारण व्यवहार की भाषा गद्य ही है, जिसका प्रयोग सोचने, समझने, वर्णन, विवेचन आदि के लिए होता है। वक्ता जो कुछ सोचता है, उसे तत्काल अनायास गद्य के रूप में व्यक्त भी कर सकता है। ज्ञान-विज्ञान की समृद्धि के साथ ही गद्य की उपादेयता और महत्ता में वृद्धि होती जा रही है। किसी कवि या लेखक के हृदयगत भावों को समझने के लिए ज्ञान की आवश्यकता है और गद्य ज्ञान-वृद्धि का एक सफल साधन है। इसीलिए इतिहास, भूगोल, राजनीतिशास्त्र, धर्म, दर्शन आदि के क्षेत्र में ही नहीं, अपितु नाटक, कथा-साहित्य आदि में भी इसका एकच्छत्र प्रभाव स्थापित हो गया है। यदि विचारपूर्वक देखा जाय तो आधुनिक हिन्दी-साहित्य की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना गद्य का आविष्कार ही है और गद्य का विकास होने पर ही हमारे साहित्य की बहुमुखी उन्नति भी सम्भव हो सकी है।

हिन्दी गद्य के सम्बन्ध में यह धारणा है कि मेरठ और दिल्ली के आस-पास बोली जानेवाली खड़ीबोली के साहित्यिक रूप को ही हिन्दी गद्य कहा जाता है। भाषा-विज्ञान की दृष्टि से ब्रजभाषा, खड़ीबोली, कन्नौजी, हरियाणवी, बुन्देलखण्डी, अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी इन आठ बोलियों को हिन्दी गद्य के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है। हिन्दी गद्य के प्राचीनतम् प्रयोग हमें 'राजस्थानी' एवं 'ब्रजभाषा' में मिलते हैं।

गद्य और पद्य में अन्तर–हिन्दी साहित्य को दो भागों में बाँटा गया है—(1) गद्य साहित्य तथा (2) पद्य (काव्य) साहित्य। विषय की दृष्टि से गद्य और पद्य में यह अन्तर है कि गद्य के विषय विचार-प्रधान और पद्य के विषय भाव-प्रधान होते हैं। दूसरी भाषाओं के समान इस भाषा के साहित्य में भी पद्य का अवतरण गद्य के बहुत पहले हुआ है। पद्य में कार्य की अनुभूति, उक्ति-वैचित्र्य, सम्प्रेषणीयता और अलंकार की प्रवृत्ति देखी जाती है, जबकि गद्य में लेखक अपने विचारों को अभिव्यक्त करता है। गद्य में तर्क, बुद्धि, विवेक, चिन्तन का अंकुश होता है तो पद्य में स्वतन्त्र कल्पना की उड़ान होती है। गद्य में शब्द, वाक्य, अर्थ आदि सभी प्रायः सामान्य होते हैं, जबकि पद्य में विशिष्ट। कविता शब्दों की नयी सृष्टि है, इसलिए इसका कोई भी शब्द कोशीय अर्थ से प्रतिबन्धित नहीं होता, जीवन की अनुभूतियों से उसका भावात्मक सम्बन्ध होता है, जबकि गद्य भावात्मक सन्दर्भों के स्थान पर वस्तुनिष्ठ प्रतीकात्मक अर्थ ग्रहण करता है। गद्य को 'निर्माणात्मक अभिव्यक्ति' कहा गया है अर्थात् ऐसी अभिव्यक्ति जिसमें निर्माता के चारों ओर प्रयोग के लिए तैयार शब्द रहते हैं। गद्य की भाषा काव्य की अपेक्षा अधिक स्पष्ट, व्याकरणसम्मत और व्यवस्थित होती है। उक्ति-वैचित्र्य और अलंकरण की प्रवृत्ति भी गद्य की अपेक्षा काव्य में अधिक होती है। गद्य में विस्तार अधिक होने के कारण किसी बात को खोलकर कहने की प्रवृत्ति रहती है, जबकि काव्य में किसी बात को संकेत रूप में ही कहने की प्रवृत्ति होती है। गद्य में यथार्थ, वस्तुपरक और तथ्यात्मक वर्णन पाया जाता है, जबकि काव्य में वर्णन सूक्ष्म, संकेतात्मक होता है। गद्य में विरला ही वाक्य अपूर्ण होता है, काव्य में विरला ही वाक्य पूर्ण होता है। इस प्रकार गद्य और पद्य विषय, भाषा, प्रस्तुति, शिल्प आदि की दृष्टि से अभिव्यक्ति के सर्वथा भिन्न दो रूप हैं और दोनों के दृष्टिकोण एवं प्रयोजन भी भिन्न होते हैं। गद्य में व्याकरण के नियमों की अवहेलना नहीं की जा सकती, जबकि पद्य में व्याकरण के नियमों पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता। यद्यपि ऐसा नहीं है कि गद्य में भावपूर्ण चिन्तनशील मनःस्थितियों की अभिव्यक्ति नहीं हो सकती और ऐसा भी नहीं है कि पद्य में विचारों की अभिव्यक्ति नहीं हो सकती, किन्तु मुख्य रूप से गद्य एवं पद्य की प्रकृति उपर्युक्त प्रकार की ही होती है।

हिन्दी गद्य का स्वरूप और विकास

विषय और परिस्थिति के अनुरूप शब्दों का सही स्थान-निर्धारण तथा वाक्यों की उचित योजना ही उत्तम गद्य की कसौटी है। यद्यपि वर्तमान में प्रचलित हिन्दी भाषा खड़ीबोली का परिनिष्ठित एवं साहित्यिक रूप है, परन्तु खड़ीबोली स्वयं अपने आपमें कोई बोली नहीं है।

इसका विकास कई क्षेत्रीय बोलियों के समन्वय के फलस्वरूप हुआ है। विद्वानों ने इसके प्राचीन रूप पर आधारित तत्त्वों की खोज करने के बाद यह माना है कि खड़ीबोली का विकास मुख्यतः ब्रजभाषा एवं राजस्थानी गद्य से हुआ है। कुछ विद्वान् इसको दक्खिनी एवं अवधी गद्य का सम्मिश्रित रूप भी मानते हैं। आज हिन्दी गद्य का जो साहित्यिक रूप है; उसमें कई क्षेत्रीय बोलियों का विकास दृष्टिगोचर होता है।

हिन्दी गद्य के आविर्भाव के सम्बन्ध में विद्वानों के अलग-अलग मत हैं। कुछ दसवीं शताब्दी मानते हैं तो बहुतेरे तेरहवीं शताब्दी। 'राजस्थानी' एवं 'ब्रजभाषा' में हमें गद्य के प्राचीनतम् प्रयोग मिलते हैं। राजस्थानी गद्य की समय-सीमा ग्यारहवीं शताब्दी से चौदहवीं शताब्दी तथा ब्रजभाषा गद्य की समय-सीमा चौदहवीं शताब्दी से सोलहवीं शताब्दी तक मानना उचित प्रतीत होता है। अतः यह स्पष्ट है कि दसवीं-ग्यारहवीं से तेरहवीं शताब्दी के मध्य ही हिन्दी गद्य का आविर्भाव हुआ था। अध्ययन की दृष्टि से हिन्दी गद्य साहित्य के विकास को निम्नलिखित कालक्रमों में विभाजित किया जा सकता है—

1. पूर्व भारतेन्दु-युग अथवा प्राचीन युग	—13वीं शताब्दी से 1868 ई० तक
2. भारतेन्दु-युग	—सन् 1868 ई० से 1900 ई० तक
3. द्विवेदी-युग	—सन् 1900 ई० से 1922 ई० तक
4. शुक्ल-युग (छायावादी युग)	—सन् 1922 ई० से 1938 ई० तक
5. शुक्लोत्तर युग (छायावादोत्तर युग)	—सन् 1938 ई० से 1947 ई० तक
6. स्वातन्त्र्योत्तर युग	—सन् 1947 ई० से अब तक।

प्राचीन-युगीन गद्य

इस युग के अन्तर्गत हिन्दी गद्य के उद्भव से भारतेन्दु युग के पूर्व तक का समय लिया गया है। वस्तुतः हिन्दी गद्य-साहित्य के आदिकाल में हिन्दी गद्य के प्राचीन रूप ही यत्र-तत्र उपलब्ध होते हैं। राजस्थान व दक्षिण भारत में तो अवश्य हिन्दी गद्य के प्रारम्भिक रूप की झलक मिलती है। उत्तर भारत में ब्रजभाषा गद्य के ही उदाहरण अधिक मात्रा में प्राप्त होते हैं। प्राचीन युग में काव्य-रचना के साथ-साथ गद्य-रचना की दिशा में भी कुछ स्फुट प्रयास लक्षित होते हैं। 'राउलवेल' (चम्पू), 'उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण' और 'वर्णरत्नाकर' इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। कुछ विद्वान 'राउलवेल' को ही राजस्थानी गद्य की प्राचीनतम रचना मानते हैं। 'राउलवेल' एक शिलांकित कृति है, जिसका पाठ मुम्बई के प्रिंस ऑफ वेल्स संग्रहालय से उपलब्ध कर प्रकाशित कराया गया है। विद्वानों ने इसका रचनाकाल दसवीं शताब्दी माना है। इसकी रचना 'राउल' नायिका के नख-शिख वर्णन के प्रसंग में हुई है। आरम्भ में इस कृति के रचयिता 'रोडा' ने राउल के सौन्दर्य का वर्णन पद्य में किया है और फिर गद्य का प्रयोग किया गया है। दूसरी रचना 'उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण' है, जिसकी रचना महाराज गोविन्द चन्द्र के सभा-पण्डित दामोदर शर्मा ने बारहवीं शताब्दी में की थी। इस ग्रन्थ की भाषा का एक उदाहरण इस प्रकार है—''वेद पढ़ब, स्मृति अभ्यासिब, पुराण देखब, धर्म करब।'' इससे गद्य और पद्य दोनों शैलियों की हिन्दी भाषा में तत्सम शब्दावली के प्रयोग की बढ़ती हुई प्रवृत्ति का पता चलता है। मैथिली के प्राप्त ग्रन्थों में ज्योतिरीश्वर का वर्णरत्नाकर ग्रन्थ ऐसी तीसरी रचना है। मैथिली हिन्दी में रचित गद्य की यह पुस्तक डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी और पण्डित बबुआ मिश्र के सम्पादन में बंगाल एशियाटिक सोसायटी से प्रकाशित हो चुकी है। डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी के मतानुसार इसकी रचना चौदहवीं शताब्दी में हुई होगी।

इसके उपरान्त तो राजस्थानी गद्य, ब्रजभाषा गद्य और खड़ीबोली का प्रारम्भिक गद्य-साहित्य आदि ही विचारणीय सामग्री है। हिन्दी-परिवार की भाषाओं में गद्य का उन्मेष सर्वप्रथम **राजस्थानी गद्य** में प्राप्त होता है। राजस्थानी में गद्य-परम्परा निश्चित रूप से ईसा की तेरहवीं शताब्दी से प्रारम्भ होती है। राजस्थानी गद्य के प्रारम्भिक विकास में जैन विद्वानों का विशेष योग रहा है और इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह ब्रजभाषा के गद्य-साहित्य की अपेक्षा अधिक प्राचीन व समृद्ध है। राजस्थानी गद्य दानपत्रों, पट्टे, परवानों, सनदों, वार्त्ताओं और टीकाओं आदि के रूप में उपलब्ध होता है। उस पर संस्कृत अपभ्रंश की परम्परा का प्रभाव स्वाभाविक रूप से पड़ा है। राजस्थानी की प्रमुख गद्य रचनाएँ हैं—'आराधना', 'बालशिक्षा टीका', 'जगत् सुन्दरी प्रयोगमाला', 'अतिचार', 'नवकार', 'व्याख्यान टीका', 'सबतीर्थ नमस्कार स्तवन', 'तत्त्वविचार प्रकरण', 'पृथिवीचन्द्र चरित्र', 'धनपाल कथा', 'तपोगच्छ गुर्वावली', 'अंजनासुन्दरी कथा' आदि।

ब्रजभाषा गद्य का सूत्रपात संवत् 1400 वि० के आस-पास माना जाता है। ब्रजभाषा गद्य का प्राचीनतम् रूप आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार सन् 1457 ई० तक का ही उपलब्ध होता है और उन्होंने योगियों के धार्मिक उपदेशों में से कुछ उद्धृत कर उसे संवत् 1400 वि० के आस-पास का ब्रजभाषा गद्य मान लिया है। किन्तु भाषा-प्रयोग की दृष्टि से ब्रजभाषा गद्य के प्राचीनतम नमूने सन् 1513 ई० के पूर्व के नहीं हैं। धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों के साथ वैद्यक, ज्योतिष, इतिहास, भूगोल, गणित, धनुर्वेद, शकुन आदि विषयों का प्रतिपादन ब्रजभाषा गद्य में हुआ है। ब्रजभाषा गद्य-साहित्य स्थूलतः चार वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

मौलिक, टीकात्मक, अनूदित और पद्य-प्रधान रचनाओं में यत्र-तत्र प्रयुक्त टिप्पणीपरक गद्य। मौलिक (स्वतन्त्र) गद्य वल्लभ सम्प्रदाय के वचनामृतों, वार्त्ताग्रन्थों, कथा पुस्तकों, दर्शन विषयक ग्रन्थों, वैद्यक, ज्योतिष आदि उपयोगी विषयों, रचनाओं और पत्रों, शिलालेखों तथा कागज-पत्रों के रूप में उपलब्ध होता है। टीका, टिप्पणी, तिलक और भावना शीर्षक से व्याख्यात्मक गद्य प्राप्त होता है। इसी प्रकार अनुवाद अथवा छायानुवाद रूप में लिखित ग्रन्थ भी प्राप्त हैं। गद्य-प्रधान ग्रन्थों में टिप्पणीपरक गद्य चर्चा, वार्त्ता, तिलक या वचनिका शीर्षक लिखा गया है। सत्रहवीं शताब्दी तक की लिखी हुई जो रचनाएँ उपलब्ध हैं, उनमें गोस्वामी विट्ठलनाथ का 'शृंगार रस-मण्डन', गोकुलनाथ जी की 'चौरासी वैष्णवन की वार्त्ता' और 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्त्ता', नाभादास जी का 'अष्टयाम', बैकुण्ठमणि शुक्ल के 'अगहन महातम' एवं 'वैसाख महातम', 'ध्रुवदास कृत' 'सिद्धान्त विचार' तथा लल्लूलाल कृत 'माधव विलास' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन्हीं के साथ टीकाओं की परम्परा भी चलती रही। प्रमुख टीकाएँ भुवनदीपिका टीका, एकादशस्कन्ध टीका, हितसंवर्धिनी टीका, धरनी-धरदास की टीका और लोकनाथ की गद्य-पद्यमयी टीका।

खड़ीबोली गद्य की प्रामाणिक रचनाएँ सत्रहवीं शताब्दी ई० से प्राप्त होती हैं। इस सन्दर्भ में सन् 1623 में लिखित जटमल कृत 'गोरा बादल की कथा' उल्लेख्य है। आरम्भिक खड़ीबोली गद्य ब्रजभाषा से प्रभावित है। खड़ीबोली नाम पड़ने का कारण सम्भवतः इसका 'खरा' होना है। कुछ लोग मधुर ब्रजभाषा की तुलना में इसके कर्कश होने के कारण इसे 'खड़ीबोली' कहना उपयुक्त समझते हैं। कुछ लोगों की धारणा है कि मेरठ के आसपास की पड़ी बोली को खड़ी बनाकर लश्करों में प्रयोग किया गया, इसलिए इसे 'खड़ीबोली' कहते हैं। ब्रजभाषा के प्रभाव से मुक्त खड़ीबोली गद्य का आरम्भ उन्नीसवीं शताब्दी से माना जा सकता है। 'खड़ीबोली' गद्य का एक रूप 'दक्खिनी गद्य' का है। मुहम्मद तुगलक के समय में अच्छी संख्या में उत्तर के मुसलमान दक्षिण में जाकर बस गये। इसके साथ इनकी भाषा भी दक्षिण पहुँची और वहाँ 'दक्खिनी हिन्दी' का विकास हुआ। दक्खिनी हिन्दी में गद्य और पद्य दोनों ही लिखे गये हैं। दक्खिनी खड़ीबोली गद्य का प्रामाणिक रूप सन् 1580 से प्राप्त है। इनमें प्रायः सूफी धर्म के सिद्धान्त लिखे गये हैं।

खड़ीबोली गद्य का विकास

खड़ीबोली गद्य के प्रारम्भिक उन्नायकों में विशेष रूप से चार लेखकों का उल्लेख किया जाता है—मुंशी सदासुख लाल (राय), मुंशी इंशा अल्ला खाँ, सदल मिश्र, पंडित लल्लूलाल। इन लेखकों से कुछ पहले पटियाला दरबार के रामप्रसाद निरंजनी और मध्य प्रदेश के पं० दौलतराम ने साधु और व्यवस्थित खड़ीबोली का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया था। रामप्रसाद निरंजनी के **'भाषा योग वाशिष्ठ'** की भाषा अधिक परिष्कृत है। मुंशी सदासुख लाल (राय) दिल्ली के रहनेवाले थे। इन्होंने विष्णुपुराण का एक अंश लेकर उसे खड़ीबोली गद्य में प्रस्तुत किया। सदा सुखलाल की रचना 'सुखसागर' है। धार्मिक ग्रंथ होने के कारण इसमें पंडिताऊपन अधिक है। वाक्य-रचना पर फारसी शैली का प्रभाव है। मुंशी इंशा अल्ला खाँ ने **'रानी केतकी की कहानी'** लिखी है। इनकी शैली हास्य प्रधान और चटपटी है। तुकान्त वाक्यों का प्रयोग अधिक है। मुंशीजी लखनऊ के नवाब सआदत अली खाँ के दरबार में रहते थे। इसलिए उनकी शैली में तड़क-भड़क, शोखी और रंगीनी अधिक है। सदल मिश्र जिला आरा (बिहार) के निवासी थे। यह कलकत्ता के फोर्ट विलियम कालेज में हिन्दी के शिक्षक के रूप में कार्य करते थे। **'नासिकेतोपाख्यान'** इनकी प्रसिद्ध रचना है। इसमें पूर्वीपन अधिक है और वाक्य-रचना शिथिल है। पं० लल्लूलाल आगरा में रहनेवाले गुजराती ब्राह्मण थे। यह भी फोर्ट विलियम कालेज में नियुक्त थे। इनकी प्रसिद्ध रचना **'प्रेमसागर'** है। इसका गद्य ब्रजभाषा के प्रभाव से मुक्त नहीं है। कहीं-कहीं तुक-मैत्री का मोह खटकता है। भाषा परिमार्जित नहीं है। जिस समय ये लेखक हिन्दी खड़ीबोली गद्य में कहानी और आख्यान लिख रहे थे, उसी समय ईसाई मिशनरी भी ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए बाइबिल का हिन्दी खड़ीबोली गद्य में अनुवाद कराकर उसका प्रचार कर रहे थे। जनता के जीवन में घुलमिल कर उसे अपने अनुकूल बनाने के प्रयत्न में इन लोगों ने हिन्दी भाषा की सेवा की और हिन्दी गद्य के विकास में विशेष योग दिया। सामान्यतः ईसाई मिशनरियों की भाषा भी अपरिमार्जित और ऊबड़-खाबड़ है। तात्पर्य यह है कि अठारहवीं शताब्दी ई० के अन्तिम चरण और उन्नीसवीं शताब्दी ई० के प्रथम चरण में खड़ीबोली गद्य के किसी भी लेखक की भाषा पूर्णतः परिमार्जित नहीं है। इन लेखकों का खड़ीबोली गद्य के विकास-क्रम में ऐतिहासिक महत्त्व अवश्य है।

भारतीय जागरण

उन्नीसवीं शताब्दी ई० के द्वितीय एवं तृतीय चरण में हमारे देश में सामाजिक और सांस्कृतिक ढाँचे में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। शिक्षा का पश्चिमीकरण हुआ। यातायात के साधनों में वृद्धि हुई। सामन्तवादी शासन-व्यवस्था का अन्त हुआ। अंग्रेजों की नौकरशाही पर आधृत नवीन शासन व्यवस्था ने अराजकता की स्थिति को दूर कर देश में शान्ति स्थापित की। 'प्रेसों' की स्थापना के साथ अनेक

प्रकार की पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ। अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार-प्रसार से नवीन चेतना की लहर दौड़ गयी और अनेक सामाजिक, धार्मिक आन्दोलनों ने देश के जन-मानस को मथकर उसे आधुनिक विचारधाराओं को ग्रहण करने की स्थिति में ला दिया। इस नवीन चेतना के अभ्युदय को भारतीय जागरण (रेनेसाँ) की संज्ञा दी गयी है। इस जागरण को देशव्यापी रूप देने और इसकी गति को तीव्र करने में 'ब्रह्म समाज' (सन् 1828), 'रामकृष्ण मिशन', 'प्रार्थना समाज' (सन् 1867), 'आर्य समाज' (सन् 1867) और 'थियोसॉफिकल सोसाइटी' (सन् 1882) जैसी संस्थाओं का विशेष योगदान माना जाता है। उत्तर भारत में इस नये जागरण का आरम्भ अंग प्रदेश से हुआ। यहीं से समाचार-पत्रों के प्रकाशन की शुरुआत भी हुई। यह प्रदेश ब्रजभाषा केन्द्र से बहुत दूर पड़ता था। इसलिए नवीन चेतना को व्यक्त करने का दायित्व खड़ीबोली गद्य को ही वहन करना पड़ा। यह स्मरणीय है कि इस समय तक उत्तर भारत में पंजाब से लेकर बंग प्रदेश तक खड़ीबोली गद्य का प्रसार हो चुका था।

भारतेन्दु-युगीन गद्य

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में हिन्दी साहित्य का आकाश **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** (सन् 1850-1885) के पूर्ण प्रकाश से जगमगा उठा। उससे कुछ वर्ष पूर्व हिन्दी खड़ीबोली गद्य के क्षेत्र में दो महत्त्वपूर्ण व्यक्ति गद्य की दो भिन्न-भिन्न शैलियों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। एक थे राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द (सन् 1823-1895), दूसरे थे राजा लक्ष्मणसिंह (सन् 1826-1896)। राजा शिवप्रसाद ने हिन्दी को पाठशालाओं के पाठ्यक्रम में स्थान दिलाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया था। वे हिन्दी का प्रचार तो चाहते थे किन्तु उसे अधिक नफ़ीस बनाकर उर्दू जैसा रूप प्रदान करने के पक्ष में थे। दूसरी ओर राजा लक्ष्मणसिंह संस्कृतनिष्ठ हिन्दी के पक्षपाती थे। भारतेन्दु ने इन दोनों सीमान्तों के बीच का मार्ग ग्रहण किया। उन्होंने हिन्दी गद्य को वह रूप प्रदान किया जो हिन्दी-प्रदेश की जनता की मनोभावना के अनुकूल था। उनका गद्य व्यावहारिक, सजीव और प्रवाहपूर्ण है। उन्होंने यथासंभव लोक-प्रचलित शब्दावली का प्रयोग किया है। उनके वाक्य छोटे-छोटे और व्यंजक हैं। कहावतों, लोकोक्तियों और मुहावरों के यथोचित प्रयोग से उनकी भाषा प्राणवान् और स्वाभाविक बन गयी है। इतना होने पर भी भारतेन्दु का गद्य पूर्ण परिमार्जित नहीं है। उनका गद्य भी ब्रजभाषा के प्रयोगों से प्रभावित है और कहीं-कहीं व्याकरण की त्रुटियाँ खटकती हैं।

भारतेन्दु के सहयोगी

भारतेन्दुजी का व्यक्तित्त्व अत्यन्त प्रभावशाली था। वे सुलझे हुए व्यक्ति थे। लोक की गति को पहचानते थे। जनता की भावनाओं को समझते थे और देश एवं जाति की उन्नति के लिए सर्वस्व अर्पित करने के लिए तत्पर रहते थे। उनके समकालीन लेखक उन्हें अपना आदर्श मानते थे। बालकृष्ण भट्ट (सन् 1844-1914), पं० प्रतापनारायण मिश्र (सन् 1856-1894), राधाचरण गोस्वामी (सन् 1859-1925), बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' (1855-1923), ठाकुर जगमोहन सिंह (सन् 1857-1899), राधाकृष्णदास (सन् 1865-1907), किशोरीलाल गोस्वामी (1865-1932) आदि गद्य लेखक उनसे प्रेरित और प्रभावित थे। इन सभी लेखकों ने हिन्दी गद्य के विकास में पूरा सहयोग दिया। ये सभी गद्य लेखक पत्रकार भी थे। इनका उद्देश्य उद्बोधन, आह्वान, व्याख्या, टिप्पणी आदि के द्वारा जनता को शिक्षित और प्रबुद्ध करना था। पं० बालकृष्ण भट्ट इलाहाबाद से 'हिन्दी प्रदीप' नामक मासिक पत्र निकालते थे। इस पत्र में उनके निबंध प्रकाशित होते थे। भट्टजी संस्कृत के पंडित और अंग्रेजी के जानकार थे। उनकी भाषा-नीति उदार थी। आवश्यकतानुसार उन्होंने अंग्रेजी, उर्दू, संस्कृत एवं लोकभाषा सभी से शब्द लिए हैं। उनका व्यक्तित्त्व खरा था। इसलिए उनकी शैली में भी मृदुता के स्थान पर खरापन है। प्रताप नारायण मिश्र कानपुर से 'ब्राह्मण' पत्र निकालते थे। वे मनमौजी व्यक्ति थे। उनकी शैली में उनका फक्कड़पन स्पष्ट है। उनकी भाषा पर बैसवाड़ी बोली का विशेष प्रभाव है। उनकी भाषा में ठेठ ग्रामीण प्रयोग अधिक मिलते हैं। बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' 'आनन्दकादम्बिनी' का सम्पादन करते थे। उनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ और शैली काव्यात्मक एवं अलंकृत है। उनके वाक्य लम्बे और समास-बहुल हैं। भारतेन्दु के अन्य सहयोगियों ने भाषा एवं शैली के सम्बन्ध में इन्हीं लेखकों का आदर्श सामने रखा। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हिन्दी गद्य के विकास की दृष्टि से भारतेन्दु युग अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

द्विवेदी-युगीन गद्य

सन् 1900 तक भारतेन्दु युग की समाप्ति मानी जाती है। सन् 1900 से 1922 तक अर्थात् शताब्दी के प्रथम चरण को हिन्दी साहित्य में द्विवेदी-युग माना जाता है। इस युग को जागरण-सुधार काल भी कहा गया है। हिन्दी गद्य साहित्य के इतिहास में **पं० महावीरप्रसाद**

द्विवेदी (सन् 1864-1938) का आविर्भाव एक महत्त्वपूर्ण घटना है। द्विवेदीजी रेलवे के एक साधारण कर्मचारी थे। उन्होंने स्वेच्छा से हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, मराठी और बंगला भाषाओं का अध्ययन किया था। सन् 1903 में आपने रेलवे की नौकरी छोड़कर 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन आरम्भ किया। 'सरस्वती' के माध्यम से आपने हिन्दी साहित्य की अभूतपूर्व सेवा की। द्विवेदीजी ने व्याकरणनिष्ठ, संयमित, सरल, स्पष्ट और विचारपूर्ण गद्य के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की, भाषा के प्रयोगों में एकरूपता लाने और उसे व्याकरण के अनुशासन में लाकर व्यवस्थित करने में द्विवेदीजी ने स्तुत्य प्रयास किया। इसी समय बाबू बालमुकुन्द गुप्त उर्दू से हिन्दी में आये। उन्होंने हिन्दी गद्य को मुहावरेदार सजीव और परिष्कृत करने में पूरा-पूरा ध्यान दिया। 'अनस्थिरता' शब्द के प्रयोग को लेकर द्विवेदीजी से उनका विवाद प्रसिद्ध है। इस युग में द्विवेदीजी के अतिरिक्त माधव मिश्र, गोविन्द नारायण मिश्र, पद्मसिंह शर्मा, सरदार पूर्णसिंह, बाबू श्यामसुन्दर दास, मिश्रबन्धु, लाला भगवानदीन, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, गणेश शंकर विद्यार्थी आदि लेखकों ने हिन्दी गद्य के विकास में योग दिया। इस युग में गद्य साहित्य के विभिन्न रूपों का विकास हुआ और गंभीर निबंध, विवेचनापूर्ण आलोचनाएँ तथा मौलिक कहानियाँ, उपन्यास और नाटक लिखे गये। इसी युग में काशी में बाबू श्यामसुन्दर दास ने 'नागरी प्रचारिणी सभा' की स्थापना की और हिन्दी के उपयोगी एवं गंभीर साहित्य के निर्माण की दिशा में स्तुत्य प्रयास किया। 'सरस्वती' के अतिरिक्त 'इन्दु', 'सुदर्शन', 'समालोचक', 'प्रभा', 'मर्यादा', 'माधुरी' आदि पत्रिकाएँ इसी युग में प्रकाशित हुईं। द्विवेदी युग के उत्तरार्द्ध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और बाबू गुलाब राय ने चिन्तन-प्रधान गद्य के विकास में उल्लेखनीय कार्य किया। द्विवेदी युग में गद्य शैली के अनेक रूप सामने आये। पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी की साफ-सुथरी, संयमित, परिमार्जित प्रसन्न-शैली; बाबू श्यामसुन्दर दास की औदात्यपूर्ण व्यास शैली; गोविन्द नारायण मिश्र की तत्सम प्रधान, समास बहुल, पांडित्यपूर्ण शैली; बालमुकुन्द गुप्त की ओजस्वी, प्रवाहपूर्ण, तीखी, व्यंग्य शैली; मिश्र बन्धुओं की सूचना-प्रधान, तथ्यान्वेषिणी शैली; पद्मसिंह शर्मा की प्रशंसात्मक शैली; सरदार पूर्णसिंह की लाक्षणिक एवं आवेगशील शैली; चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की पांडित्यपूर्ण, व्यंग्यमयी शैली; गणेश शंकर विद्यार्थी की मर्मस्पर्शी, ओजस्विता, मूर्तविधायिनी शैली; पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी की सुबोध और रमणीय गद्य-शैली; आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की चिन्तन-प्रधान, आत्मविश्वासमंडित, तत्त्वान्वेषिणी, समास शैली और बाबू गुलाब राय की सहज हास्यपूर्ण तथा विषयानुसार विचार-प्रधान एवं संयमित शैली के वैविध्य-पूर्ण विधान से द्विवेदी-युगीन गद्य-साहित्य अद्भुत गरिमा से मंडित हो गया है।

छायावाद-युगीन गद्य

सन् 1919 में पंजाब के जलियाँवाला बाग में आयोजित सभा में निहत्थी तथा असहाय जनता को गोलियों से भून दिया गया। सन् 1920 ई० में गाँधीजी ने व्यापक असहयोग आन्दोलन आरम्भ किया, किन्तु लगभग दो वर्ष बाद ही यह आन्दोलन स्थगित कर दिया गया। कुछ वर्ष बाद सन् 1931 में सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी भगतसिंह को फाँसी दी गयी। इन घटनाओं ने राष्ट्रीय चेतना को और दृढ़ किया। युवकों का कल्पनाशील मानस कुछ कर गुजरने के लिए तड़पने लगा। इस युग में पराधीनता और विवशता की अनुभूति से आकुल होकर यदि कभी वेदना और पीड़ा के गीत गाये गये, तो दूसरे ही क्षण स्वाधीनता के लिए सतत संघर्ष की बलवती प्रेरणा से उत्साहित होकर स्फूर्ति और आत्म-विश्वास की भावना को मुखरित किया गया। द्विवेदी युग सब मिलाकर नैतिक मूल्यों के आग्रह का युग था। इसलिए नवीन भावनाओं से प्रेरित युग-लेखक इसकी प्रतिक्रिया-स्वरूप भाव-तरल, कल्पना-प्रधान एवं स्वच्छन्द चेतना से युक्त साहित्य रचना में प्रवृत्त हुए। यह प्रवृत्ति कविता और गद्य दोनों ही क्षेत्रों में लक्षित होती है। सन् 1919 से 1938 तक के काल-खण्ड को हिन्दी साहित्य के इतिहास में छायावाद-युग नाम दिया गया है। इस युग की सीमा में रचित गद्य अधिक कलात्मक हो गया है। उसकी अभिव्यंजना-शक्ति विकसित हुई है। वह चित्रण-प्रधान, लाक्षणिक, अलंकृत और कवित्वपूर्ण हो गया है। उसमें अनुभूति की सघनता और भावों की तरलता है। उसकी प्रकृति अन्तर्मुखी हो गयी है। रायकृष्णदास, वियोगी हरि, महाराजकुमार डॉ० रघुवीर सिंह, पं० माखनलाल चतुर्वेदी, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, 'पंत', 'निराला', नन्ददुलारे वाजपेयी, बेचन शर्मा 'उग्र', शिवपूजन सहाय आदि गद्य-लेखकों ने छायावाद-युगीन गद्य-साहित्य को समृद्ध किया है। द्विवेदी युग के उत्तरार्द्ध में जो लेखक सामने आये थे वे छायावाद-युग में भी लिखते रहे और उनकी प्रौढ़तम रचनाएँ इसी युग में पुस्तकाकार प्रकाशित हुईं। इनमें आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, बाबू गुलाब राय तथा पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी प्रमुख हैं। इनकी साहित्य चेतना का मूल स्वर द्विवेदी-युगीन ही है, किन्तु छायावाद युग के अतीत प्रेम, सहज रहस्यमयता और लाक्षणिकता के महत्त्व को इन लेखकों ने भी स्वीकार किया है। उपर्युक्त लेखकों में राय कृष्णदास और वियोगी हरि अपने भावपूर्ण प्रतीकात्मक गद्यगीतों के लिए, महाराजकुमार डॉ० रघुवीर सिंह अपनी अतीतोन्मुखी भावतरल रहस्यात्मक कल्पना के लिए, माखनलाल चतुर्वेदी अपनी प्रखर राष्ट्रीयता एवं स्वच्छन्द आलंकारिक-शैली के लिए, जयशंकर प्रसाद अपने मर्मस्पर्शी कल्पनाचित्र के लिए, 'पंत' अपनी सुकुमार कल्पना और नाद-सौन्दर्य-प्रधान गद्य के लिए, 'निराला' अपनी अद्भुत

व्यंग्यात्मकता और सहानुभूतिप्रवण रेखांकन क्षमता के लिए, महादेवी वर्मा अपनी करुण, संवेदना एवं मर्मस्पर्शी चित्र-विधान के लिए, नन्ददुलारे वाजपेयी अपने गंभीर अध्ययन और स्वतंत्र चिन्तन के लिए, बेचन शर्मा 'उग्र' अपनी तीखी प्रतिक्रिया और आवेगपूर्ण नाटकीय शैली के लिए तथा शिवपूजन सहाय अपनी ग्रामीण सरलता के लिए स्मरणीय हैं।

छायावादोत्तर-युगीन गद्य

सन् 1936 के बाद देश की स्थिति में तेजी से परिवर्तन आरम्भ हुआ। सन् 1937 में कांग्रेस ने पूरे देश में अपने व्यापक प्रभाव का परिचय देते हुए छह प्रान्तों में अपना मंत्रिमंडल बना लिया। एक बार ऐसा लगा कि हम स्वतंत्रता के द्वार पर खड़े हैं। किन्तु शीघ्र ही निराश होना पड़ा। सन् 1939 में द्वितीय महायुद्ध आरम्भ हो गया। कांग्रेस ने इंग्लैण्ड को युद्ध में सहायता देना इस शर्त पर स्वीकार किया कि वह शीघ्र भारत में एक स्वतंत्र जनतंत्रवादी सरकार की स्थापना करे। ब्रिटिश सरकार की ओर से कोई संतोषजनक प्रतिक्रिया न होने पर सन् 1939 में कांग्रेस मंत्रिमंडलों ने त्यागपत्र दे दिया। सन् 1940 में आचार्य विनोबा भावे के नेतृत्व में व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा आन्दोलन आरम्भ किया गया। सन् 1942 में 'क्रिप्स-मिशन' भारत आया और अपने उद्देश्य में असफल रहा। इसी वर्ष कांग्रेस ने 'भारत छोड़ो' का ऐतिहासिक प्रस्ताव पास किया। देश में उग्र आन्दोलन हुआ और ब्रिटिश सरकार ने उसका पूरी शक्ति से दमन किया। सन् 1945 में महायुद्ध समाप्त हुआ। सन् 1947 में भारत में विदेशी सत्ता का अन्त हुआ किन्तु इसके साथ ही देश का विभाजन भी हो गया। विभाजन के परिणामस्वरूप भीषण साम्प्रदायिक दंगे हुए और देश की जनता तबाह हुई। इन घटनाओं ने हिन्दी साहित्य को बहुत दूर तक प्रभावित किया। सन् 1936 के बाद से ही हम कल्पना के लोक से उतर कर ठोस जमीन पर आने की चेष्टा करने लगे थे। मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित लेखकों ने प्रगतिवादी साहित्य-सृजन के प्रति प्रतिबद्धता दिखायी थी।

राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना से प्रेरित लेखकों ने भी क्रमशः यथार्थवादी जीवन-दर्शन को महत्त्व देना आरम्भ किया। छायावादी युग के कई लेखक नयी भूमि पर पदार्पण कर नवीन युग-चेतना के अनुसार साहित्य रचना में प्रवृत्त हुए। फलस्वरूप सन् 1938 के बाद 'छायावाद' का अन्त हुआ। उसके बाद के साहित्य को छायावादोत्तर साहित्य कहा गया है। छायावादोत्तर-युग के साहित्यकार स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पूर्व से लिखते आ रहे थे और उसके बाद भी सक्रिय रहे हैं। इनमें आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, शान्तिप्रिय द्विवेदी, रामधारीसिंह 'दिनकर', यशपाल, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', भगवतीचरण वर्मा, अमृतलाल नागर, जैनेन्द्र, 'अज्ञेय', नगेन्द्र, रामवृक्ष बेनीपुरी, बनारसीदास चतुर्वेदी, वासुदेवशरण अग्रवाल, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', भगवतशरण उपाध्याय आदि गद्य-लेखक हैं। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के गद्य में पांडित्य और चिन्तन के साथ ही सहजता एवं सरसता का अद्भुत समन्वय है। भाषा पर द्विवेदीजी का असाधारण अधिकार है। उन्होंने हिन्दी गद्य में बाणभट्ट की समास-गुंफित ललित पदावली अवतरित कर उसे अद्भुत गरिमा प्रदान की है। शान्तिप्रिय द्विवेदी अपनी प्रभावग्राहिणी प्रज्ञा और भावोच्छ्वसित शैली के लिए प्रसिद्ध हैं। दिनकर के गद्य में विचारशीलता, विषयवैविध्य एवं व्यक्तित्त्व-व्यंजना तीनों का समन्वय है। यशपाल और 'अश्क' का गद्य सामाजिक यथार्थ के विविध स्तरों को व्यक्त करने से समर्थ है। भगवतीचरण वर्मा का गद्य सामाजिक, सहज, व्यावहारिक, प्रवाहपूर्ण एवं व्यंग्यगर्भित है। अमृतलाल नागर के गद्य में लखनवी तर्ज की एक विशेष प्रकार की रवानी है। मूलतः कथाकार होने के नाते इन लेखकों में वर्णनात्मक शैली का विशेष आकर्षण है। जैनेन्द्र का गद्य उनकी दार्शनिक मुद्रा और मनोवैज्ञानिक निगूढ़ता के लिए विख्यात है। 'अज्ञेय' अपनी बौद्धिकता के लिए प्रसिद्ध हैं। उनका गद्य चिन्तन-प्रधान एवं परिष्कृत होने के साथ ही व्यक्तित्त्व-व्यंजक और व्यंग्यगर्भित भी है। उन्होंने हिन्दी गद्य को आधुनिक परिवेश से जोड़ने का सफल प्रयास किया है। डॉ० नगेन्द्र का गद्य सामान्यतः तर्क-प्रधान, विश्लेषण-परक और आत्मविश्वास की गरिमा से पूर्ण होता है किन्तु उसमें सन्दर्भ के अनुकूल नाटकीयता, व्यंग्य तथा बिम्ब-विधान भी लक्षित किया जा सकता है। रामवृक्ष बेनीपुरी अपने शब्द-चित्रों के लिए प्रसिद्ध हैं। ग्रामीण जीवन की निश्छल अभिव्यक्ति उनके गद्य को प्राणवान् बना देती है। बनारसीदास चतुर्वेदी की ख्याति उनके संस्मरणों, जीवनियों और रेखाचित्रों के लिए है। उनकी शैली रोचक और भाषा प्रवाहपूर्ण है। उनके छोटे-छोटे वाक्य अनुभव खण्डों को चित्रवत् प्रस्तुत करते चलते हैं। वासुदेवशरण अग्रवाल का गद्य सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक गरिमा से मंडित है। उसमें विद्वत्ता, विचारशीलता और सरसता का अद्भुत समन्वय है। कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' अपने राजनीतिक संस्मरणों और रिपोर्ताजों के लिए प्रसिद्ध हैं। करुणा, व्यंग्य और भावुकता के समावेश से उनका गद्य अत्यन्त आकर्षक हो गया है। भगवतशरण उपाध्याय इतिहास के चिरस्मरणीय घटनाओं को भावपूर्ण नाटकीय शैली में प्रस्तुत करने में समर्थ हैं। उनका गद्य उनके इतिहास-ज्ञान एवं संस्कृति-बोध का परिचायक है।

स्वातन्त्र्योत्तर-युगीन गद्य

इस युग के लेखकों में विद्यानिवास मिश्र, हरिशंकर परसाई, फणीश्वरनाथ 'रेणु', कुबेरनाथ राय, धर्मवीर भारती, शिवप्रसाद सिंह आदि उल्लेखनीय हैं। विद्यानिवास मिश्र अपनी मांगलिक दृष्टि, सांस्कृतिक चेतना, लोक-सम्पृक्ति एवं आधुनिक जीवन-बोध के लिए प्रसिद्ध हैं। उनका गद्य उनके व्यक्तित्त्व को साकार कर देता है। हरिशंकर परसाई ने सामाजिक और राजनीतिक जीवन की विसंगतियों पर तीखा व्यंग्य किया है। उन्होंने हिन्दी गद्य की व्यंग्य क्षमता को निखारा है। 'रेणु' का गद्य ध्वनि-बिम्बों के माध्यम से वातावरण को सजीव बनाने में सक्षम है। कुबेरनाथ राय ने आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की गद्य-परम्परा को आगे बढ़ाया है। प्राचीन सांस्कृतिक एवं साहित्यिक सन्दर्भों को नयी अर्थवत्ता प्रदान करके श्री राय ने हिन्दी गद्य को नयी भाव-भूमि प्रदान की है। धर्मवीर भारती गंभीर एवं विचारपूर्ण गद्य लिखते रहे हैं। यात्रावृत्त, रिपोर्ताज तथा व्यंग्य-विद्रूप लिखकर उन्होंने अपने गद्य को अपेक्षाकृत हल्की मनःस्थितियों से जोड़ने की चेष्टा की है। शिवप्रसाद सिंह लोक-चेतना से सम्पृक्त होते हुए भी व्यापक दृष्टि-सम्पन्न लेखक हैं। उनका गद्य मानव सम्बन्धी चेतना का वाहक है। इन लेखकों ने हिन्दी गद्य को सशक्त बनाया है, उसकी शब्द-सम्पदा में वृद्धि की है। उसे जीवन की बाह्य परिस्थितियों, सामाजिक सम्बन्धों, विसंगतियों, आधुनिक मानव के आंतरिक द्वन्द्वों एवं तनावों को व्यक्त करने में सक्षम बनाया है, अनेक नवीन कलात्मक गद्य-विधाओं का विकास किया है और सब मिला कर उसे राष्ट्रीय गरिमा प्रदान की है। अब हिन्दीतर प्रदेशों के लेखक भी हिन्दी में रुचि लेने लगे हैं। विदेशों में भी हिन्दी का प्रचार बढ़ रहा है। हिन्दी का भविष्य अब उज्ज्वल है और उसके विश्व-स्तर पर प्रतिष्ठित होने की संभावना बढ़ गयी है।

हिन्दी गद्य की विधाएँ

हिन्दी गद्य की विधाओं को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है। एक वर्ग प्रमुख विधाओं का है। इसमें नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी, निबंध और आलोचना को रखा जा सकता है। दूसरा वर्ग गौण या प्रकीर्ण गद्य-विधाओं का है। इसके अन्तर्गत जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृत्त, गद्य-काव्य, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, डायरी, भेंटवार्त्ता, पत्र-साहित्य आदि का उल्लेख किया जा सकता है। प्रमुख विधाओं में 'नाटक', 'उपन्यास', 'कहानी' तथा 'निबंध' और 'आलोचना' का आरम्भ तो भारतेन्दु युग (सन् 1870-1900) में ही हो गया था। किन्तु गौण या प्रकीर्ण गद्य-विधाओं में कुछ का विकास द्विवेदी-युग और शेष का छायावाद और छायावादोत्तर-युग में हुआ है। द्विवेदी युग में 'जीवनी', 'यात्रावृत्त', 'संस्मरण' और 'पत्र साहित्य' का आरम्भ हो गया था। छायावाद-युग में 'गद्य-काव्य', 'संस्मरण' और 'रेखाचित्र' की विधाएँ विशेष समृद्ध हुईं। छायावादोत्तर-युग में प्रकीर्ण गद्य-विधाओं का अभूतपूर्व विकास हुआ है। 'आत्मकथा', 'रिपोर्ताज', 'भेंटवार्त्ता', 'व्यंग्य-विद्रूप-लेखन', 'डायरी', 'एकालाप' आदि अनेक विधाएँ छायावादोत्तर-युग में विकसित और समृद्ध हुई हैं। यहाँ यह स्मरणीय है कि प्रमुख गद्य विधाएँ अपनी रूप-रचना में एक दूसरे से सर्वथा स्वतंत्र हैं, किन्तु प्रकीर्ण गद्य-विधाओं में से अनेक निबंध विधा से पारिवारिक सम्बन्ध रखती हैं। एक ही परिवार से सम्बद्ध होने के कारण यह एक-दूसरे के पर्याप्त निकट प्रतीत होती हैं।

(क) प्रमुख विधाएँ

नाटक

रंगमंच पर अभिनय द्वारा प्रस्तुत करने की दृष्टि से लिखी गयी तथा पात्रों एवं संवादों पर आधारित एक से अधिक अंकोंवाली दृश्यात्मक साहित्यिक रचना को नाटक कहते हैं। नाटक वस्तुतः रूपक का एक भेद है। रूप का आरोप होने के कारण नाटक को रूपक कहा गया है। अभिनय के समय नट पर दुष्यन्त या राम जैसे ऐतिहासिक पात्र का आरोप किया जाता है, इसीलिए इसे रूपक कहते हैं। नट (अभिनेता) से सम्बद्ध होने के कारण इसे नाटक कहते हैं। नाटक में ऐतिहासिक पात्र-विशेष की शारीरिक एवं मानसिक अवस्था का अनुकरण किया जाता है। आज नाटक शब्द अंग्रेजी 'ड्रामा' या 'प्ले' का पर्याय बन गया है। हिन्दी में मौलिक नाटकों का आरम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से माना जाता है। द्विवेदी युग में इसका अधिक विकास नहीं हुआ। छायावाद-युग में जयशंकर प्रसाद ने ऐतिहासिक नाटकों के विकास में महत्त्वपूर्ण योग दिया। छायावादोत्तर-युग में लक्ष्मी नारायण मिश्र, उदयशंकर भट्ट, उपेन्द्रनाथ अश्क, सेठ गोविन्ददास, डॉ० रामकुमार वर्मा, जगदीशचन्द्र माथुर, मोहन राकेश आदि ने इस विधा को विकसित किया है। नाटकों का एक महत्त्वपूर्ण रूप एकांकी है। 'एकांकी' किसी एक महत्त्वपूर्ण घटना, परिस्थिति या समस्या को आधार बनाकर लिखा जाता है और उसकी समाप्ति एक ही अंक में उस घटना के चरम क्षणों को मूर्त करते हुए कर दी जाती है। हिन्दी में एकांकी नाटकों का विकास छायावाद युग से माना जाता है। सामान्यतः श्रेष्ठ नाटककारों ने ही श्रेष्ठ एकांकियों की भी रचना की है।

उपन्यास

हिन्दी में 'उपन्यास' शब्द का आविर्भाव संस्कृत के 'उपन्यस्त' शब्द से हुआ है। उपन्यास शब्द का शाब्दिक अर्थ है—सामने रखना। उपन्यास में 'प्रसादन' अर्थात् प्रसन्न करने का भाव भी निहित है। किसी घटना को इस प्रकार सामने रखना कि उससे दूसरों को प्रसन्नता हो, उपन्यस्त करना कहा जायेगा। किन्तु इस अर्थ में 'उपन्यास' का प्रयोग आजकल नहीं होता। हिन्दी में 'उपन्यास' अंग्रेजी 'नावेल' का पर्याय बन गया है। हिन्दी का पहला मौलिक उपन्यास लाला श्रीनिवासदास कृत **'परीक्षा गुरु'** माना जाता है। प्रेमचन्दजी ने हिन्दी उपन्यास को सामयिक-सामाजिक-जीवन से सम्बद्ध करके एक नया मोड़ दिया था। वे 'उपन्यास' को मानव-चरित्र का चित्र समझते थे। उनकी दृष्टि में 'मानव-चरित्र' पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्त्व है। वस्तुतः उपन्यास गद्य साहित्य की वह महत्त्वपूर्ण कलात्मक विधा है जो मनुष्य को उसकी समग्रता में व्यक्त करने में समर्थ है। प्रेमचन्द के बाद जैनेन्द्र, इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय, यशपाल, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', भगवतीचरण वर्मा, अमृतलाल नागर, नरेश मेहता, फणीश्वरनाथ रेणु, धर्मवीर भारती, राजेन्द्र यादव आदि लेखकों ने हिन्दी उपन्यास साहित्य को समृद्ध किया है।

कहानी

जीवन के किसी मार्मिक तथ्य को नाटकीय प्रभाव के साथ व्यक्त करनेवाली, अपने में पूर्ण कलात्मक गद्य-विधा को कहानी कहा जाता है। हिन्दी में मौलिक कहानियों का आरम्भ 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन के बाद हुआ। कहानी या आख्यायिका हमारे देश के लिए नयी चीज नहीं है। पुराणों में शिक्षा, नीति एवं हास्य-प्रधान अनेक आख्यायिकाएँ उपलब्ध होती हैं, किन्तु आधुनिक साहित्यिक कहानियाँ उद्देश्य और शिल्प में उनसे भिन्न हैं। आधुनिक कहानी जीवन के किसी मार्मिक तथ्य को नाटकीय प्रभाव के साथ व्यक्त करनेवाली अपने में पूर्ण एक कलात्मक गद्य-विधा है जो पाठक को अपनी यथार्थपरता और मनोवैज्ञानिकता के कारण निश्चित रूप से प्रभावित करती है। हिन्दी कहानी के विकास में प्रेमचन्द का महत्त्वपूर्ण योगदान है। प्रेमचन्दोत्तर या छायावादोत्तर युग में जैनेन्द्र, 'अज्ञेय', इलाचन्द्र जोशी, यशपाल, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, अमरकान्त, मोहन राकेश, फणीश्वरनाथ 'रेणु', द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण', शिवप्रसाद सिंह, धर्मवीर भारती, मन्नू भण्डारी, शिवानी, निर्मल वर्मा आदि लेखकों ने इस दिशा को अधिक कलात्मक और समृद्ध बनाया है।

आलोचना

आलोचना का शाब्दिक अर्थ है—किसी वस्तु को भली प्रकार देखना। भली प्रकार देखने से किसी वस्तु के गुण-दोष प्रकट होते हैं। इसलिए किसी साहित्यिक रचना को भली प्रकार देखकर उसके गुण-दोषों को प्रकट करना उसकी आलोचना करना है। आलोचना के लिए 'समीक्षा' शब्द भी प्रचलित है। इसका भी लगभग यही अर्थ है। हिन्दी में आलोचना अंग्रेजी के 'क्रिटिसिज्म' शब्द का पर्याय बन गया है। भारतीय काव्य-चिन्तन के क्षेत्र में सैद्धान्तिक या शास्त्रीय आलोचना का विशेष महत्त्व रहा है। हमारा यह पक्ष अत्यन्त समृद्ध और पुष्ट है। हिन्दी में आधुनिक पद्धति की आलोचना का आरम्भ भारतेन्दु युग में बालकृष्ण भट्ट और बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' द्वारा लाला श्रीनिवासदास कृत 'संयोगिता स्वयंवर' नाटक की आलोचना से माना जाता है। आगे चलकर द्विवेदी युग में पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी, मिश्र बन्धु, बाबू श्यामसुन्दर दास, पद्मसिंह शर्मा, लाला भगवानदीन आदि ने इस क्षेत्र में विशेष कार्य किया। हिन्दी आलोचना का उत्कर्ष आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की आलोचना कृतियों के प्रकाशन से मान्य है। आचार्य शुक्ल के बाद बाबू गुलाब राय, पं० नन्ददुलारे वाजपेयी, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ० नगेन्द्र और डॉ० रामविलास शर्मा की हिन्दी आलोचना के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

निबंध

हिन्दी में निबंध शब्द अंग्रेजी के 'एसे' शब्द के पर्याय के रूप में व्यवहृत होता है। 'एसे' शब्द का अर्थ है—प्रयास। अर्थात् किसी विषय के सम्बन्ध में कुछ कहने का प्रयास ही 'एसे' है। 'प्रयास' होने के कारण 'एसे' या निबंध अपने मूलरूप में प्रौढ़ रचना नहीं मानी गयी है। यह शिथिल मनःस्थिति में लिखित अव्यवस्थित और ढीली-ढाली रचना समझी जाती है। व्यवहार में विचार-प्रधान गंभीर लेखों तथा भाव-प्रधान आत्म-व्यंजक रचनाओं, दोनों के लिए निबंध शब्द का प्रयोग होता है। निबंध को परिभाषित करते हुए बाबू गुलाबराय ने कहा है—"निबंध उस गद्य-रचना को कहते हैं जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छन्दता, सौष्ठव और सजीवता तथा आवश्यक संगति और सम्बद्धता के साथ किया गया हो।" निबंध मुख्यतः चार प्रकार के माने गये हैं।

1. वर्णनात्मक—इसमें किसी वस्तु को स्थिर रूप में देखकर उसका वर्णन किया जाता है।

2. विवरणात्मक—इसमें किसी वस्तु को उसके गतिशील रूप में देखकर उसका वर्णन किया जाता है।

3. विचारात्मक—इसमें विचार और तर्क की प्रधानता होती है।

4. भावात्मक—यह भाव-प्रधान होता है। इसमें आवेगशीलता होती है।

वस्तुतः निबंध-लेखक के व्यक्तित्त्व के अनुसार निबंध-रचना के अनेक प्रकार हो सकते हैं। यह भेद सुविधा की दृष्टि से निबंधों को मोटे तौर पर वर्गीकृत करने के लिए किये गये हैं।

हिन्दी में निबंध-रचना का आरम्भ भारतेन्दु-युग से ही माना जाता है। भारतेन्दु-युग में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट और बालमुकुन्द गुप्त ने अनेक विषयों से सम्बन्धित सुन्दर निबंध लिखे थे। उसके बाद महावीरप्रसाद द्विवेदी, बाबू श्यामसुन्दर दास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, बाबू गुलाबराय, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी आदि ने इस विधा को विकसित और समृद्ध किया। आचार्य शुक्ल के बाद आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, महादेवी वर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी, रामधारीसिंह 'दिनकर', वासुदेवशरण अग्रवाल, डॉ० नगेन्द्र, विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय आदि लेखकों ने हिन्दी निबंध की परम्परा को आगे बढ़ाया।

(ख) गौण या प्रकीर्ण विधाएँ

गौण विधाओं का एक-दूसरे से निकट का सम्बन्ध है। ये सभी एक प्रकार से निबंध-परिवार में आती हैं। प्रायः सभी का सम्बन्ध लेखक के व्यक्तिगत जीवन और उसके परिवेश से है। लेखक अपने देश-काल और परिवेश के प्रति जितने ही संवेदनशील होंगे, गौण कही जानेवाली विधाओं का उतना ही विकास होगा। सम्प्रति हिन्दी गद्य में इन विधाओं की रचना प्रचुर परिमाण में हो रही है। इसलिए हिन्दी गद्य के साम्प्रतिक स्वरूप को समझने के लिए इन विधाओं के विकास का ज्ञान आवश्यक है।

जीवनी

सफल जीवनी के लिए आवश्यक है कि किसी महान् व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक की घटनाओं को काल-क्रम से इस रूप में प्रस्तुत करना कि उस व्यक्ति का व्यक्तित्त्व निखर उठे। जीवनी-लेखक तटस्थ रहता है। वह अपनी प्रतिक्रियाएँ व्यक्त नहीं करता। यों तो हिन्दी में जीवनी लेखन का कार्य भारतेन्दु युग में ही आरम्भ हो गया था, किन्तु आदर्श जीवनियाँ बहुत बाद में लिखी गयीं। द्विवेदी-युग में ऐतिहासिक पुरुषों और धार्मिक नेताओं की जीवनियाँ अधिक लिखी गयीं। इस युग के जीवनी-लेखकों में लक्ष्मीधर वाजपेयी, सम्पूर्णानन्द, नाथूराम प्रेमी, मुकुन्दीलाल वर्मा उल्लेखनीय हैं। छायावाद युग में राष्ट्रीय महापुरुषों—लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, गाँधी, जवाहरलाल नेहरू आदि की जीवनियाँ अधिक लिखी गयीं। इस युग के जीवनी-लेखकों में रामनरेश त्रिपाठी, गणेश शंकर विद्यार्थी, मन्मथनाथ गुप्त, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद और मुंशी प्रेमचन्द उल्लेखनीय हैं। छायावादोत्तर-युग में लोकप्रिय नेताओं, संत-महात्माओं, विदेशी महापुरुषों, वैज्ञानिकों, खिलाड़ियों और साहित्यकारों की जीवनियाँ लिखी गयीं। इस युग के जीवनी-लेखकों में काका कालेलकर, जैनेन्द्र कुमार, रामनाथ सुमन, रामवृक्ष बेनीपुरी, बनारसीदास चतुर्वेदी, राहुल सांकृत्यायन विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इधर अमृत राय, शान्ति जोशी, रामविलास शर्मा और विष्णु प्रभाकर ने क्रमशः 'कलम का सिपाही', 'सुमित्रानन्दन पंत—जीवनी और साहित्य', 'निराला की साहित्य साधना' तथा 'आवारा मसीहा' लिखकर साहित्यकारों की आदर्श जीवनियाँ प्रस्तुत करने की परम्परा का श्रीगणेश किया है।

आत्मकथा

जब लेखक अपने जीवन को स्वयं प्रस्तुत करता है तो वह 'आत्मकथा' लिखता है। स्वयं अपने को निर्मम भाव से प्रस्तुत करना कठिन कार्य है। इसलिए आदर्श आत्मकथा लिखना भी कठिन कार्य है। बीती हुई घटनाओं को क्रमबद्ध रूप में स्मृति के आधार पर प्रस्तुत करना और उनके साथ ही तटस्थ रहकर आत्म-निरीक्षण करना सरल नहीं है, हिन्दी में यों तो स्वयं भारतेन्दु ने 'एक कहानी कुछ आप बीती कुछ जग बीती' लिखकर इस दिशा में प्रयोग आरम्भ किया भी, किन्तु यह प्रयोग अधूरा रह गया। हिन्दी की आदर्श आत्मकथाएँ छायावाद और छायावादोत्तर युग में लिखी गयी हैं। इस क्षेत्र में बाबू श्यामसुन्दर दास कृत 'मेरी आत्म कहानी', वियोगी हरि कृत 'मेरा जीवन प्रवाह', राजेन्द्र बाबू कृत 'मेरी आत्मकथा', यशपाल कृत 'सिंहावलोकन', पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' कृत 'अपनी खबर', बाबू गुलाब राय कृत 'मेरी असफलताएँ, वृन्दावनलाल वर्मा कृत 'अपनी कहानी', 'पन्त' कृत 'साठ वर्ष एक रेखांकन' और लोकप्रिय कवि बच्चन कृत 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' तथा 'नीड़ का निर्माण फिर' उल्लेखनीय कृतियाँ हैं।

यात्रावृत्त

जब लेखक अपने जीवन की अविस्मरणीय यात्राओं का विवरण आत्म-कथात्मक शैली में प्रस्तुत करता है तो वह 'यात्रा साहित्य' की सृष्टि करता है। आदर्श यात्रावृत्त वह माना जाता है जिसमें यात्रा-क्रम में आये हुए स्थान और बीती हुई घटनाएँ लेखक की स्मृति संवेदना का अंग बनकर चित्रवत् अंकित होती जाती हैं। यात्रावृत्त आत्मकथा का अंश भी हो सकता है और स्वतंत्र रूप से भी लिखा जा सकता है। यात्रावृत्त में 'आत्मकथा', 'संस्मरण' और 'रिपोर्ताज' तीनों के तत्त्व पाये जाते हैं। हिन्दी में 'यात्रावृत्त' लिखने का क्रम भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से प्रारम्भ होता है किन्तु कलात्मक यात्रावृत्त छायावाद और छायावादोत्तर-युग में लिखे गये हैं। इस क्षेत्र में राहुल सांकृत्यायन, देवेन्द्र सत्यार्थी, 'अज्ञेय', यशपाल, नगेन्द्र, मोहन राकेश, निर्मल वर्मा आदि के द्वारा प्रस्तुत यात्रावृत्त उल्लेखनीय हैं।

गद्यगीत या गद्यकाव्य

गद्यगीत में भक्ति, प्रेम, करुणा आदि भावनाएँ छोटे-छोटे कल्पना-चित्रों के माध्यम से अन्योक्ति या प्रतीक पद्धति पर व्यक्त की जाती हैं। अनुभूति की सघनता, भावाकुलता, संक्षिप्तता, रहस्यमयता तथा सांकेतिकता श्रेष्ठ गद्यगीत की विशेषताएँ हैं। हिन्दी में गद्य-गीतों का आरम्भ राय कृष्णदास के 'साधना संग्रह' के प्रकाशन से हुआ। इसके बाद वियोगी हरि का 'तरंगिणी' संग्रह प्रकाशित हुआ। ये दोनों कृतियाँ द्विवेदी-युग की सीमा में आती हैं। इसके बाद छायावाद-युग में गद्य-गीतों की रचना अधिक हुई। राय कृष्णदास और वियोगी हरि के अतिरिक्त चतुरसेन शास्त्री, वृन्दावनलाल वर्मा, 'अज्ञेय' और डॉ० रामकुमार वर्मा ने भी गद्यगीतों के क्षेत्र में अच्छे प्रयोग किये। छायावादोत्तर-युग में दिनेशनंदिनी डालमिया, डॉ० रघुवीर सिंह, तेज नारायण काक, रामवृक्ष बेनीपुरी आदि ने सुन्दर गद्य-गीतों की रचना की।

संस्मरण

जब लेखक अपने निकट सम्पर्क में आनेवाले महत् विशिष्ट, विचित्र, प्रिय और आकर्षक व्यक्तियों, घटनाओं या दृश्यों को स्मृति के सहारे पुनः कल्पना में मूर्त करता है और उसे शब्दांकित करता है तब वह संस्मरण लिखता है। संस्मरण लिखते समय लेखक पूर्णतः तटस्थ नहीं रह पाता। याद आनेवाले का अंकन करते हुए वह स्वयं भी अंकित हो जाता है। संस्मरण-लेखक के लिए संवेदनशील, प्रभावग्राही और व्यक्ति या वस्तु के वैशिष्ट्य को लक्षित करनेवाला होना चाहिए। हिन्दी में आदर्श संस्मरण छायावादोत्तर-युग में लिखे गये हैं। इस क्षेत्र में श्रीराम शर्मा, महादेवी वर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', देवेन्द्र सत्यार्थी, बनारसीदास चतुर्वेदी आदि का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

रेखाचित्र

रेखाचित्र में भी किसी व्यक्ति, वस्तु या सन्दर्भ का चित्रांकन किया जाता है। इसमें सांकेतिकता अधिक होती है। जिस प्रकार रेखा-चित्रकार थोड़ी सी रेखाओं को प्रयोग करके किसी व्यक्ति, वस्तु या सन्दर्भ की मूलभूत विशेषता को उभार देता है उसी प्रकार लेखक कम से कम शब्दों का प्रयोग करके किसी व्यक्ति या वस्तु की मूलभूत विशेषता को उभार देता है। रेखाचित्र में लेखक का पूर्णतः तटस्थ होना आवश्यक है। वस्तुतः संस्मरण और रेखाचित्र एक-दूसरे से मिलती-जुलती विधाएँ हैं। संस्मरण में भी चित्र-शैली का ही प्रयोग किया जाता है किन्तु रेखाचित्र में चित्र अधूरा या खंडित भी हो सकता है, जबकि संस्मरण में चित्र छोटा या लघु भले हो उसे अपने आप में पूर्ण बनाकर प्रस्तुत किया जाता है। संस्मरण अभिधामूलक होता है किन्तु रेखाचित्र सांकेतिक और व्यंजक होता है। वस्तुतः रेखाचित्र संस्मरण का कलात्मक विकास है। हिन्दी में महादेवी वर्मा, प्रकाश चन्द्र गुप्त, रामवृक्ष बेनीपुरी, बनारसीदास चतुर्वेदी, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', विनयमोहन शर्मा, विष्णु प्रभाकर और डॉ० नगेन्द्र के रेखाचित्र उल्लेखनीय हैं।

रिपोर्ताज

रिपोर्ट के कलात्मक और साहित्यिक रूप को ही रिपोर्ताज कहते हैं। रिपोर्ताज में समसामयिक घटनाओं को उनके वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। रिपोर्ताज लेखक का घटना से प्रत्यक्ष साक्षात्कार आवश्यक है। इसलिए युद्ध की विभीषिका, अकाल की छाया या पूरे मानव समाज को प्रभावित करनेवाली अन्य महत्त्वपूर्ण घटनाओं के घटित होने पर पत्रकार और साहित्यकार उस घटना के अनेक संदर्भों की प्रत्यक्ष जानकारी हासिल करते हैं और उन्हें रिपोर्ताज शैली में प्रस्तुत करके पाठक के मन को झकझोर देते हैं। हिन्दी में रिपोर्ताज लिखने का प्रचलन छायावादोत्तर युग में हुआ है। इस क्षेत्र में रांगेय राघव, बालकृष्ण राव, धर्मवीर भारती, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', 'विष्णुकांत शास्त्री आदि लेखकों के नाम उल्लेखनीय हैं।

डायरी

जब लेखक तिथि-विशेष में घटित घटना-चक्र को यथातथ्य रूप में अथवा अपनी संक्षिप्त प्रतिक्रिया या टिप्पणी के साथ लिख लेता है तो यह लेखन डायरी विधा के रूप में स्वीकार किया जाता है। डायरी कुछ महत्त्वपूर्ण तिथियों में घटित घटनाओं को लेकर भी लिखी जा सकती है और क्रमबद्ध रूप में रोजनामचा के रूप में भी लिखी जा सकती है। उसका आकार कुछ पंक्तियों तक ही सीमित हो सकता है और कई पृष्ठों तक विस्तृत भी। वह स्वतंत्र रूप से भी लिखी जा सकती है और कहानी, उपन्यास या यात्रावृत्त के अंग के रूप में भी। डायरी मूलतः लेखक की निजी वस्तु है। इसमें उसे अपने निजी विचार, दृष्टि, उद्भावना और प्रतिक्रिया व्यक्त करने की छूट है। यह दूसरी बात है कि जिस लेखक का सारा जीवन ही सार्वजनिक हो, उसकी डायरी भी सार्वजनिक बातों को लेकर लिखी जाय। कभी-कभी डायरी घटित तथ्य को आधार न बनाकर संभावित और काल्पनिक सत्य को लेकर भी लिखी जाती है। इसमें शिल्प डायरी का होता है किन्तु तथ्याधार सार्वजनिक होता है। हिन्दी में डायरी विधा का आरम्भ छायावादी-युग से मान्य है। इस सन्दर्भ में धीरेन्द्र वर्मा कृत 'मेरी कालेज डायरी' उल्लेखनीय है। छायावादोत्तर-युग में इलाचन्द्र जोशी, रामधारीसिंह 'दिनकर, शमशेर बहादुर सिंह, मोहन राकेश आदि की डायरियाँ प्रकाशित हुई हैं। हिन्दी में गद्य की इस कलात्मक विधा का अभी पूर्ण विकास नहीं हुआ है।

भेंटवार्त्ता

जब किसी महान् दार्शनिक, राजनीतिज्ञ या साहित्यकार से मिलकर साहित्य, दर्शन या राजनीति के विषय में कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न किये जाते हैं और उनसे प्राप्त उत्तरों को व्यवस्थित ढंग से लिपिबद्ध कर लिया जाता है तो भेंटवार्त्ता की सृष्टि होती है। भेंटवार्त्ता वास्तविक भी होती है और काल्पनिक भी। भेंट-वार्त्ताओं में जिस व्यक्ति से भेंट की जाती है उसके स्वभाव, रुचि, कार्य-कुशलता, बुद्धिमत्ता तथा अपनी उत्सुकता, संभ्रमता आदि का उल्लेख करके लेखक भेंट-वार्त्ताओं को अधिक रुचिकर बना सकता है। हिन्दी में वास्तविक और काल्पनिक दोनों ही प्रकार की भेंट-वार्त्ताएँ लिखी गयी हैं। वास्तविक भेंटवार्त्ता लिखनेवालों में पद्मसिंह शर्मा और रणवीर साँगा के नाम उल्लेखनीय हैं। काल्पनिक भेंट-वार्त्ता लिखनेवालों में राजेन्द्र यादव (चैखव : एक इण्टरव्यू) और श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन (भगवान् महावीर : एक इण्टरव्यू) उल्लेखनीय हैं। भेंट-वार्त्ताएँ छायावादोत्तर-युग में ही लिखी गयी हैं। अभी हिन्दी में इस विधा के विकास की पूरी संभावना है।

पत्र-साहित्य

जब लेखक अपने किसी मित्र, परिचित या अल्प परिचित व्यक्ति को अपने सम्बन्ध में या किसी महत्त्वपूर्ण समस्या के सम्बन्ध में उसकी और अपनी सामाजिक स्थिति को ध्यान में रखकर उचित आदर, सम्मान या स्नेह का भाव प्रकट करते हुए निजी तौर पर मात्र सूचना, जिज्ञासा या समाधान लिखकर भेजता है और उत्तर की अपेक्षा रखता है तो वह पत्र-साहित्य का सृजन करता है। पत्र नितांत निजी हो सकते हैं और सार्वजनिक भी। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ भेजे जानेवाले पत्र प्रायः सार्वजनिक प्रश्नों को लेकर लिखे जाते हैं। साहित्यिक दृष्टि से वे पत्र अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं जो प्रकाशनार्थ नहीं लिखे जाते और मात्र दो व्यक्तियों की बीच की वस्तु होते हैं। हिन्दी साहित्य में पत्र-प्रकाशन का आरम्भ द्विवेदी युग में ही हो गया था। महात्मा मुंशीराम ने स्वामी दयानन्द सम्बन्धी पत्रों का संकलन सन् 1904 में प्रकाशित कराया था। छायावाद-युग में रामकृष्ण आश्रम, देहरादून से 'विवेकानन्द पत्रावली' का प्रकाशन किया गया। छायावादोत्तर युग में पत्र-साहित्य के संकलन और प्रकाशन की दिशा में कई महत्त्वपूर्ण कार्य हुए हैं। इस क्षेत्र में बैजनाथ सिंह 'विनोद' द्वारा संकलित 'द्विवेदी पत्रावली' (सन् 1954), बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा संकलित 'पद्मसिंह शर्मा के पत्र' (सन् 1956), वियोगी हरि द्वारा संकलित 'बड़ों के प्रेरणादायक कुछ पत्र' (सन् 1960), जानकीवल्लभ शास्त्री द्वारा संकलित 'निराला के पत्र' (सन् 1971), हरिवंश राय बच्चन द्वारा संकलित 'पंत के दो सौ पत्र बच्चन के नाम' (सन् 1971) उल्लेखनीय पत्र संकलन हैं। उक्त विधाओं के अतिरिक्त संप्रति हिन्दी गद्य-साहित्य में 'अभिनन्दन एवं स्मृति ग्रंथ', 'टिप्पणी लेखन', 'लघु कथा', 'एकालाप' आदि अनेक गद्य विधाएँ विकसित हो रही हैं।

आज जीवन की संकुलता और मानवीय सम्बन्धों की जटिलता के कारण अनेक छोटी-छोटी गद्य-विधाओं के विकसित होने की सम्भावना बढ़ गयी है। इसके साथ ही गद्य-शैली में विविधता और उसकी अभिव्यक्ति-भंगिमा में अनेकरूपता आयी है। हिन्दी-गद्य यथार्थोन्मुख हुआ है। उसकी शब्द-सम्पदा में निरन्तर वृद्धि हो रही है। वाक्य-रचना में लचीलापन आया है। आज वह बाह्य-जगत् की विराटता और आन्तरिक जीवन की गहनता, जटिलता और सूक्ष्मता को व्यक्त करने में समर्थ है। यह हिन्दी गद्य के सशक्त और समृद्ध होने का शुभ लक्षण है।

❐

हिन्दी गद्य के विकास पर आधारित प्रश्न

● **निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए–**

1. 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' के लेखक हैं– **[2020 ZA]**
(i) विट्ठलनाथ (ii) गोकुलनाथ (iii) नाभादास (iv) चतुर्भुजदास।

2. 'आनन्द कादम्बिनी' के सम्पादक थे– **[2020 ZF, ZJ]**
अथवा **'आनन्द कादम्बिनी' के सम्पादक हैं–**
(i) बालकृष्ण भट्ट (ii) प्रतापनारायण मिश्र (iii) राधाचरण गोस्वामी (iv) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'।

3. बाबू गुलाबराय की आत्मकथा है–
(i) कुछ आपबीती, कुछ जगबीती (ii) मेरा जीवन प्रवाह (iii) मेरी असफलताएँ (iv) अपनी खबर।

4. राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' की रचना है–
(i) भाग्यवती (ii) नासिकेतोपाख्यान (iii) राजा भोज का सपना (iv) प्रेमसागर।

5. 'तट की खोज' रचना है–
(i) राय कृष्णदास की (ii) सरदार पूर्णसिंह की (iii) हरिशंकर परसाई की (iv) मोहन राकेश की।

6. खड़ीबोली गद्य की प्रथम रचना है– **[2019 CL]**
अथवा **खड़ीबोली की प्रथम गद्य रचना मानी जाती है–**
(i) कृष्णावतार स्वरूप निर्णय (ii) गोरा-बादल की कथा (iii) वर्ण रत्नाकर (iv) भाषा योगवाशिष्ठ।

7. 'सौ अजान एक सुजान' के लेखक हैं– **[2020 ZL]**
(i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ii) प्रतापनारायण मिश्र (iii) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (iv) बालकृष्ण भट्ट।

8. 'ब्राह्मण' पत्रिका प्रकाशित हुई– **[2020 ZB]**
(i) द्विवेदी युग में (ii) छायावाद युग में (iii) भारतेन्दु युग में (iv) पूर्व-भारतेन्दु युग में।

9. 'अपनी खबर' पुस्तक की विधा है– **[2020 ZL]**
(i) संस्मरण (ii) रेखाचित्र (iii) जीवनी (iv) आत्मकथा।

10. हिन्दी की प्रथम डायरी है–
(i) मेरी कालिज-डायरी (ii) डायरी के पन्ने (iii) नरदेव शास्त्री की जेल-डायरी (iv) तूफानों के बीच।

11. 'अमेरिका का मस्त योगी वाल्ट ह्विटमैन' निबन्ध है–
(i) हरिशंकर परसाई का (ii) रायकृष्ण दास का (iii) सरदार पूर्णसिंह का (iv) प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी का।

12. 'निस्सहाय हिन्दू' रचना है–
(i) राधा कृष्णदास (ii) बालकृष्ण भट्ट (iii) श्रीनिवास दास (iv) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।

13. 'श्रीचन्द्रावली' नामक नाटक के रचयिता हैं–
(i) रामचन्द्र शुक्ल (ii) सेठ गोविन्द दास (iii) श्यामसुन्दर दास (iv) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।

14. आलोचनात्मक कृति 'साहित्य-सहचर' के लेखक हैं– **[2020 ZH]**
(i) महावीरप्रसाद द्विवेदी (ii) हजारीप्रसाद द्विवेदी (iii) बाबू गुलाबराय (iv) जयशंकर 'प्रसाद'।

15. 'माधुरी' पत्रिका किस युग से सम्बन्धित है?
(i) शुक्ल युग से (ii) शुक्लोत्तर युग से (iii) द्विवेदी युग से (iv) भारतेन्दु युग से।

16. 'एकांकी-सम्राट' कहा जाता है–
(i) रामकुमार वर्मा को (ii) सेठ गोविन्द दास को (iii) हरिकृष्ण प्रेमी को (iv) मोहन राकेश को।

17. 'आवारा मसीहा' गद्य-विधा की रचना है– **[2019 CO]**
(i) उपन्यास (ii) कहानी (iii) नाटक (iv) जीवनी।

18. 'रानी केतकी की कहानी' के लेखक हैं–
(i) राजा लक्ष्मण सिंह (ii) श्रद्धाराम फिल्लौरी (iii) इंशा अल्ला खाँ (iv) मुंशी सदासुख लाल।

19. रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखा गया ग्रन्थ है–
(i) हिन्दी साहित्य का आदिकाल (ii) हिन्दी भाषा का इतिहास
(iii) हिन्दी साहित्य का इतिहास (iv) देवनागरी का इतिहास।

20. 'नागरी प्रचारिणी सभा' के संस्थापक हैं–
(i) पुरुषोत्तमदास टंडन (ii) मदनमोहन मालवीय (iii) श्यामसुन्दर दास (iv) रामचन्द्र शुक्ल।

21. 'सरस्वती' के प्रथम सम्पादक हैं–
अथवा **'सरस्वती' के सम्पादक हैं–** **[2016 SE, 17 ME, 19 CQ, 20 ZA, ZC]**
(i) महावीरप्रसाद द्विवेदी (ii) श्यामसुन्दर दास (iii) पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी (iv) हरदेव बाहरी।

22. निम्नलिखित रचनाओं में से कौन-सी रचना कहानी है?
(i) त्याग-पत्र (ii) भाग्य और पुरुषार्थ (iii) पुरस्कार (iv) आन का मान।

23. निम्नलिखित में से कौन द्विवेदीकालीन गद्य लेखक/लेखिका हैं?
(i) महादेवी वर्मा (ii) सरदार पूर्णसिंह (iii) सियारामशरण गुप्त (iv) अज्ञेय।

24. 'आवारा मसीहा' के रचनाकार कौन हैं? **[2014 BK, BN]**
अथवा **'आवारा मसीहा' के रचनाकार हैं–** **[2019 CN]**
(i) रामवृक्ष बेनीपुरी (ii) रांगेय राघव (iii) विष्णु प्रभाकर (iv) राहुल सांकृत्यायन।

25. आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी द्वारा सम्पादित कौन-सी पत्रिका थी?
अथवा **आचार्य महावीर द्वारा सम्पादित पत्रिका है–**
(i) हंस (ii) सरस्वती (iii) ब्राह्मण (iv) इन्दु।

26. 'मेरी असफलताएँ' किस विधा की रचना है? **[2020 ZJ]**
(i) जीवनी साहित्य (ii) कहानी (iii) डायरी (iv) आत्मकथा।

27. 'अम्बपाली' किस विधा की रचना है?
(i) कहानी (ii) उपन्यास (iii) नाटक (iv) संस्मरण।

28. 'शृंगार रस मण्डन' के रचनाकार हैं–
(i) नाभादास (ii) गोकुलदास (iii) बैकुण्ठनाथ (iv) बिट्ठलनाथ।

29. निम्नलिखित रचनाओं में कौन छायावादी युग का गद्य लेखक है?
(i) प्रतापनारायण मिश्र (ii) हजारीप्रसाद द्विवेदी (iii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (iv) नन्ददुलारे वाजपेयी।

30. 'बहू की विदा' के रचनाकार हैं–
(i) सेठ गोविन्ददास (ii) हरिकृष्ण प्रेमी (iii) मोहन राकेश (iv) विनोद रस्तोगी।

31. बालकृष्ण भट्ट द्वारा सम्पादित पत्रिका है– **[2020 ZF]**
(i) कवि वचन सुधा (ii) हिन्दी प्रदीप (iii) विशाल भारत (iv) साहित्य संदेश।

32. 'ध्रुवस्वामिनी' किस विधा की रचना है? **[2020 ZA]**
(i) उपन्यास (ii) नाटक (iii) एकांकी (iv) कहानी।

33. निम्नलिखित में से भारतेन्दुयुगीन गद्य लेखक हैं–
अथवा **भारतेन्दु युगीन लेखक हैं–** **[2019 CM]**
(i) रघुवीर सिंह (ii) जयशंकर प्रसाद (iii) भगवत शरण उपाध्याय (iv) प्रतापनारायण मिश्र।

34. 'साधना' के रचनाकार कौन हैं?
(i) वृन्दावनलाल वर्मा (ii) मोहन राकेश (iii) राय कृष्णदास (iv) विनयमोहन शर्मा।

35. जैनेन्द्र कुमार द्वारा रचित निबंध है–
(i) पृथिवीपुत्र (ii) पूर्वोदय (iii) कुली (iv) पथ के साथी।

36. 'रूपक रहस्य' के लेखक कौन हैं?
अथवा **'रूपक रहस्य' किसकी रचना है?**
(i) श्यामसुन्दर दास (ii) वियोगी हरि (iii) रामचन्द्र शुक्ल (iv) महावीरप्रसाद द्विवेदी।

37. बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' द्वारा सम्पादित पत्रिका है–
(i) सरस्वती (ii) आनन्द कादम्बिनी (iii) प्रथा (iv) हिन्दी प्रदीप।

38. 'अंधेर नगरी' के रचनाकार कौन हैं? [2020 ZF]
(i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ii) जयशंकर प्रसाद (iii) हरिकृष्ण प्रेमी (iv) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'।

39. 'शेखर एक जीवनी' के लेखक कौन हैं?
(i) जयशंकर प्रसाद (ii) भीष्म साहनी (iii) भगवतीचरण वर्मा (iv) अज्ञेय।

40. निम्न में से 'ब्राह्मण' पत्रिका के सम्पादक कौन हैं?
अथवा **'ब्राह्मण' पत्र के सम्पादक हैं–**
(i) बालकृष्ण भट्ट (ii) महावीरप्रसाद द्विवेदी (iii) प्रतापनारायण मिश्र (iv) श्यामसुन्दर दास।

41. इनमें से कौन नाटक नहीं है?
(i) राजमुकुट (ii) गरुड़ध्वज (iii) अपना-अपना भाग्य (iv) आन का मान।

42. डॉ० सम्पूर्णानन्द द्वारा सम्पादित पत्रिका है–
(i) सरस्वती (ii) धर्मयुग (iii) मर्यादा (iv) हंस।

43. निम्नलिखित में से जीवनी है–
(i) नीड़ का निर्माण फिर (ii) आवारा मसीहा (iii) अतीत के चलचित्र (iv) चिंतामणि।

44. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा सम्पादित पत्र है–
(i) हिन्दी प्रदीप (ii) समालोचक (iii) हंस (iv) ब्राह्मण।

45. 'गोदान' किस विधा की रचना है? [2020 ZB]
(i) उपन्यास (ii) नाटक (iii) आत्मकथा (iv) डायरी।

46. निम्नलिखित में कौन-सी रचना नाटक है?
(i) जीवन कण (ii) करुणा (iii) सती (iv) स्कन्दगुप्त।

47. 'परदा' कहानी के लेखक कौन हैं?
(i) प्रेमचन्द (ii) जयशंकर प्रसाद (iii) अमरकान्त (iv) यशपाल।

48. जयशंकर प्रसाद किसके लेखक हैं?
(i) कुटज (ii) ध्रुवस्वामिनी (iii) आत्मनेपद (iv) आषाढ़ का एक दिन।

49. 'गबन' के लेखक कौन हैं? [2017 MD]
(i) भीष्म साहनी (ii) भगवतीचरण वर्मा (iii) प्रेमचन्द (iv) अज्ञेय।

50. पं० लल्लूलाल की कौन-सी रचना है?
(i) प्रेमसागर (ii) सुखसागर (iii) रानी केतकी की कहानी (iv) परीक्षा गुरु।

51. नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना किस युग में हुई?
(i) भारतेन्दु युग में (ii) द्विवेदी युग में (iii) छायावाद युग में (iv) छायावादोत्तर युग में।

52. 'प्रेमसागर' के रचनाकार हैं–
(i) सदल मिश्र (ii) सूरदास (iii) रामप्रसाद निरंजनी (iv) लल्लूलाल।

53. 'घुमक्कड़शास्त्र' के रचनाकार कौन हैं?
(i) राहुल सांकृत्यायन (ii) विद्यानिवास मिश्र (iii) डॉ० नगेन्द्र (iv) वृन्दावनलाल वर्मा।

54. 'कुटज' के रचयिता कौन हैं?
अथवा 'कुटज' निबन्ध संग्रह के लेखक हैं—
(i) अज्ञेय (ii) हजारीप्रसाद द्विवेदी (iii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (iv) यशपाल।

55. श्यामसुन्दर दास का जन्मकाल है—
(i) 1850 ई० (ii) 1864 ई० (iii) 1875 ई० (iv) 1881 ई०।

56. 'अष्टयाम' के रचनाकार हैं—
(i) गोकुलनाथ (ii) वल्लभाचार्य (iii) नाभादास (iv) तुलसीदास।

57. डॉ० रामविलास शर्मा की रचना का क्या नाम है?
(i) निराला की साहित्य साधना (ii) मेरा परिवार (iii) पर्वतों के देश में (iv) चिन्तामणि।

58. 'मेरी जीवन यात्रा' किस लेखक की आत्मकथा है?
(i) वियोगी हरि (ii) राहुल सांकृत्यायन (iii) रामवृक्ष बेनीपुरी (iv) महादेवी वर्मा।

59. 'हिन्दी प्रदीप' पत्रिका के सम्पादक कौन हैं? **[2016 SD, 17 MG, 19 CR]**
***अथवा* 'हिन्दी प्रदीप' के सम्पादक हैं—**
(i) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (ii) डॉ० श्यामसुन्दर दास (iii) बालकृष्ण भट्ट (iv) बाबू गुलाबराय।

60. 'द्विवेदी-युग' के साहित्यकार कौन हैं? **[2020 ZD, ZG]**
(i) डॉ० श्यामसुन्दर दास (ii) भगवतीचरण वर्मा (iii) यशपाल (iv) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।

61. 'चिन्तामणि' किस विधा की रचना है?
(i) उपन्यास (ii) कहानी (iii) निबन्ध (iv) नाटक।

62. 'आधुनिक हिन्दी नाटक' के लेखक कौन हैं?
(i) बदरीनारायण चौधरी (ii) डॉ० नगेन्द्र (iii) रामचन्द्र शुक्ल (iv) महादेवी वर्मा।

63. 'पतितों के देश में' किस साहित्यकार की रचना है?
(i) राहुल सांकृत्यायन (ii) रामवृक्ष बेनीपुरी (iii) कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर (iv) डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी।

64. निम्नलिखित में से कौन 'जीवनी' है?
(i) अतीत के चलचित्र (ii) चिन्तामणि (iii) आवारा मसीहा (iv) नीड़ का निर्माण फिर।

65. डॉ० सम्पूर्णानन्द द्वारा सम्पादित पत्रिका का नाम है— **[2020 ZF]**
(i) धर्मयुग (ii) हंस (iii) सरस्वती (iv) मर्यादा।

66. भारतेन्दु के सहयोगी लेखक हैं—
(i) शिवपूजन सहाय (ii) बालकृष्ण भट्ट (iii) वियोगी हरि (iv) हजारीप्रसाद द्विवेदी।

67. 'चिन्तामणि' के रचनाकार हैं— **[2017 MC, 19 CO]**
(i) श्यामसुन्दर दास (ii) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (iii) प्रेमचन्द (iv) गुलाब राय।

68. 'दीपदान' नामक रचना है—
(i) नाटक (ii) भेंटवार्त्ता (iii) लघुकथा (iv) एकांकी।

69. स्वामी दयानन्द सरस्वती की रचना है—
(i) भूदान यज्ञ (ii) भोर का तारा (iii) सत्यार्थ प्रकाश (iv) भारत-भारती।

70. हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास है— **[2018 AA]**
(i) आनन्द मठ (ii) परीक्षागुरु (iii) गबन (iv) तितली।

71. हिन्दी गद्य (खड़ीबोली) के जन्मदाता हैं–
(i) प्रतापनारायण मिश्र (ii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (iii) श्यामसुन्दर दास (iv) जयशंकर प्रसाद।

72. आलोचना के क्षेत्र में सर्वाधिक उल्लेखनीय है–
(i) मिश्रबन्धु (ii) गुलाबराय (iii) सुदर्शन (iv) रामचन्द्र शुक्ल।

73. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की रचना है–
(i) अशोक के फूल (ii) वनमाला (iii) चिन्तामणि (iv) विद्यासुन्दर।

74. 'भाग्यवती' उपन्यास के लेखक हैं–
(i) श्रद्धाराम फुल्लौरी (ii) प्रेमचन्द (iii) अमृतलाल नागर (iv) रामप्रसाद निरंजनी।

75. महावीर प्रसाद द्विवेदी का जीवन-काल है–
(i) सन् 1864-1938 (ii) सन् 1862-1935 (iii) सन् 1875-1947 (iv) सन् 1854-1925।

76. 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' में किस विभागाध्यक्ष के बाद रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी विभाग के अध्यक्ष हुए?
(i) करुणापति त्रिपाठी (ii) हजारीप्रसाद द्विवेदी (iii) श्यामसुन्दर दास (iv) विजयपाल सिंह।

77. काका कालेलकर का नाम किस विधा के लेखक के रूप में प्रसिद्ध है?
(i) निबन्ध (ii) संस्मरण (iii) आत्मकथा (iv) डायरी।

78. हजारीप्रसाद द्विवेदी को किस सन् में पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित किया गया?
(i) सन् 1957 (ii) सन् 1959 (iii) सन् 1963 (iv) सन् 1950।

79. निम्नलिखित में से 'जीवनी' है–
(i) बसेरे से दूर (ii) अनामदास का पोथा (iii) कलम का सिपाही (iv) शाश्वती।

80. छायावादोत्तर युग का प्रारम्भ माना जाता है–
अथवा **छायावादोत्तर युग का काल है–** **[2017 ME]**
(i) 1900 ई० से (ii) 1920 ई० से (iii) 1938 ई० से (iv) 1950 ई० से।

81. 'अरे यायावर रहेगा याद' के लेखक हैं– **[2020 ZK]**
(i) यशपाल (ii) नगेन्द्र (iii) मुक्तिबोध (iv) अज्ञेय।

82. कौन-सी रचना हजारीप्रसाद द्विवेदी की नहीं है?
(i) अशोक के फूल (ii) हिन्दी काव्यधारा (iii) हिन्दी साहित्य (iv) हिन्दी साहित्य की भूमिका।

83. आदिकाल की रचना नहीं है–
(i) उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण (ii) गोरा बादल की कथा (iii) राउलवेल।

84. हिन्दी कहानी एक नयी दिशा की ओर मुड़ी–
(i) सन् 1900 में (ii) सन् 1910 में (iii) सन् 1920 में (iv) सन् 1935 में।

85. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनन्तर समर्थ निबन्धकार हैं–
(i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ii) लाला श्रीनिवास (iii) महावीरप्रसाद द्विवेदी (iv) डॉ० नगेन्द्र।

86. उपन्यास विधा की रचना है–
(i) नीड़ का निर्माण फिर (ii) बाणभट्ट की आत्मकथा (iii) कलम का सिपाही (iv) पथ के साथी।

87. 'राष्ट्र का स्वरूप' के रचनाकार हैं– **[2020 ZD]**
(i) पूर्णसिंह (ii) रामवृक्ष बेनीपुरी (iii) वासुदेवशरण अग्रवाल (iv) 'अज्ञेय'।

88. 'कर्मभूमि' रचना है–
(i) प्रेमचन्द की (ii) यशपाल की (iii) किशोरीलाल गोस्वामी की (iv) बालकृष्ण भट्ट की।

89. 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' आत्मकथा है– **[2020 ZK]**
(i) सुमित्रानन्दन पंत की (ii) डॉ० राजेन्द्रप्रसाद की (iii) हरिवंशराय 'बच्चन' की (iv) 'अज्ञेय' की।

90. पं० लल्लूलाल अध्यापक नियुक्त थे–
(i) फोर्ट विलियम कालेज में (ii) मेरठ कालेज, मेरठ में (iii) रुड़की विश्वविद्यालय में (iv) काशी विश्वविद्यालय में।

91. 'विषस्य विषमौषधम्' निम्नलिखित में से है– [2020 ZK]
(i) कहानी (ii) उपन्यास (iii) नाटक (iv) निबन्ध।

92. 'नासिकेतोपाख्यान' के लेखक (रचनाकार) हैं– [2019 CN, 20 ZC]
(i) मुंशी इंशा अल्ला खाँ (ii) लल्लूलाल (iii) सदल मिश्र (iv) मुंशी सदासुखलाल।

93. जीवनी विधा में रचना है–
(i) नीड़ का निर्माण फिर (ii) आवारा मसीहा (iii) अतीत के चलचित्र (iv) चिन्तामणि।

94. द्विवेदी युग का नामकरण हुआ है–
(i) महावीरप्रसाद द्विवेदी के नाम पर (ii) हजारीप्रसाद द्विवेदी के नाम पर
(iii) जयशंकर प्रसाद के नाम पर (iv) रामकुमार वर्मा के नाम पर।

95. 'परीक्षागुरु' की रचना-विधा है–
(i) कहानी (ii) उपन्यास (iii) नाटक (iv) जीवनी।

96. निम्न में से नाटककार हैं–
(i) रामचन्द्र शुक्ल (ii) मोहन राकेश (iii) डॉ० नगेन्द्र (iv) महादेवी वर्मा।

97. 'गिरती दीवारें' के रचनाकार हैं–
(i) उपेन्द्रनाथ 'अश्क' (ii) शिवप्रसाद सिंह (iii) 'अज्ञेय' (iv) रामविलास शर्मा।

98. 'प्रजा हितैषी' समाचार-पत्र का सम्पादन किया–
(i) हजारीप्रसाद द्विवेदी ने (ii) राजा लक्ष्मण सिंह ने (iii) 'अज्ञेय' ने (iv) शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' ने।

99. छायावादोत्तर युग के गद्य लेखक हैं–
(i) जयशंकर प्रसाद (ii) माखनलाल चतुर्वेदी (iii) वासुदेवशरण अग्रवाल (iv) महावीरप्रसाद द्विवेदी।

100. सन् 1957 में 'पद्मभूषण' से अलंकृत हुए–
(i) राय कृष्णदास (ii) विद्यानिवास मिश्र (iii) 'अज्ञेय' (iv) हजारीप्रसाद द्विवेदी।

101. डॉ० सम्पूर्णानन्द को मंगलाप्रसाद पुरस्कार प्राप्त हुआ–
(i) गणेश पर (ii) चिद्विलास पर (iii) समाजवाद पर (iv) 'आर्यों का आदि देश' पर।

102. 'बेकन विचार-माला' अनूदित ग्रन्थ है–
(i) राहुल सांकृत्यायन का (ii) महावीरप्रसाद द्विवेदी का
(iii) वासुदेवशरण अग्रवाल का (iv) मोहन राकेश का।

103. 'कन्यादान' निबन्ध के लेखक हैं–
(i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ii) हजारीप्रसाद द्विवेदी (iii) डॉ० सम्पूर्णानन्द (iv) सरदार पूर्णसिंह।

104. विधा की दृष्टि से 'बोल्गा से गंगा' है–
(i) उपन्यास (ii) कहानी-संग्रह (iii) यात्रावृत्तान्त (iv) आत्मकथा।

105. अज्ञेय का 'सन्नाटा' शीर्षक लेख उनके किस निबन्ध-संग्रह में संकलित है?
(i) त्रिशंकु (ii) आत्मनेपद
(iii) सब रंग और कुछ राग (iv) लिखि कागद कोरे।

106. हिन्दी साहित्य में व्यंग्य के आधार-स्तम्भ हैं–
(i) श्यामसुन्दर दास (ii) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
(iii) हरिशंकर परसाई (iv) रामवृक्ष बेनीपुरी।

107. खलील जिब्रान के 'दि मैड मैन' कृति का 'पगला' नाम से हिन्दी में अनुवाद किया है–
(i) राय कृष्णदास (ii) रामवृक्ष बेनीपुरी (iii) राहुल सांकृत्यायन (iv) 'अज्ञेय'।

108. साहित्य का 'श्रेय और प्रेय' निबन्ध-संग्रह है–
(i) डॉ० सम्पूर्णानन्द (ii) जैनेन्द्र कुमार (iii) वासुदेवशरण अग्रवाल (iv) श्यामसुन्दर दास।

109. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' की विधा है– [2020 ZN]
(i) रेखाचित्र (ii) आत्मकथा (iii) उपन्यास (iv) निबन्ध।

110. इनमें से कहानी है– [2020 ZB]
(i) राजमुकुट (ii) गरुड़ध्वज (iii) अपना-अपना भाग्य (iv) आन का मान।

111. 'नागरी प्रचारिणी सभा' की स्थापना में योगदान है–
(i) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (ii) श्यामसुन्दर दास (iii) रामनारायण मिश्र (iv) शिवकुमार सिंह।

112. अंग्रेजी के 'स्केच' का रूपान्तरण है–
(i) जीवनी (ii) भेंटवार्त्ता (iii) रेखाचित्र (iv) रिपोर्ताज।

113. 'आनन्द की खोज और पागल पथिक' का सम्बन्ध किस विधा से है?
(i) संस्मरण (ii) निबन्ध (iii) गद्य-गीत (iv) आलोचना।

114. हिन्दी की पहली कहानी माना जाता है– [2020 ZD, ZF]
(i) नमक का दरोगा (ii) उसने कहा था (iii) कफन (iv) इन्दुमती।

115. 'तुम चन्दन हम पानी' किस विधा की रचना है?
(i) नाटक (ii) संस्मरण (iii) आत्मकथा (iv) निबन्ध।

116. आधुनिक काल के प्रमुख नाटककार माने जाते हैं–
(i) मोहन राकेश (ii) लक्ष्मीनारायण मिश्र (iii) जयशंकर प्रसाद (iv) डॉ० रामकुमार वर्मा।

117. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचना है–
(i) वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति (ii) कलि कौतुक (iii) नूतन ब्रह्मचारी (iv) प्रेम मोहिनी।

118. 'चिद्विलास' के लेखक हैं–
(i) रामकुमार वर्मा (ii) डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी (iii) डॉ० सम्पूर्णानन्द (iv) मोहन राकेश।

119. सदल मिश्र की रचना है–
(i) भारत दुर्दशा (ii) नासिकेतोपाख्यान (iii) बैताल पचीसी (iv) सुख सागर।

120. 'नीड़ का निर्माण फिर' रचना की विधा है– [2019 CL, 20 ZB, ZD, ZF]
(i) कहानी (ii) यात्रावृत्तान्त (iii) उपन्यास (iv) आत्मकथा।

121. 'द्विवेदी युग' के लेखक हैं– [2020 ZJ]
(i) अज्ञेय (ii) किशोरीलाल गोस्वामी (iii) हरिशंकर परसाई (iv) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'।

122. 'डायरी विधा' के लेखक हैं– [2020 ZK]
(i) शमशेर बहादुर सिंह (ii) राहुल सांकृत्यायन (iii) सदल मिश्र (iv) सरदार पूर्णसिंह।

123. 'मजदूरी और प्रेम' रचना किस विधा से सम्बन्धित है?
(i) नाटक (ii) कहानी (iii) निबन्ध (iv) उपन्यास।

124. चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' की प्रसिद्ध कहानी है–
(i) पंचलाइट (ii) उसने कहा था (iii) पुरस्कार (iv) आत्माराम।

125. द्विवेदी युग के लेखक हैं– [2020 ZD]
(i) नन्ददुलारे वाजपेयी (ii) हरिकृष्ण प्रेमी (iii) डॉ० नगेन्द्र (iv) सरदार पूर्णसिंह।

126. 'अशोक के फूल' निबन्ध के लेखक हैं–
(i) हजारीप्रसाद द्विवेदी (ii) राजेन्द्र यादव (iii) महादेवी वर्मा (iv) गुलाब राय।

127. द्विवेदी युग की पत्रिका है–
(i) हिन्दी प्रदीप (ii) हंस (iii) प्रताप (iv) धर्मयुग।

128. 'सदाचार की तावीज' निबन्ध संग्रह के लेखक हैं—
(i) मोहन राकेश (ii) हरिशंकर परसाई (iii) जी0 सुन्दर रेड्डी (iv) राहुल सांकृत्यायन।

129. पाठ्य-पुस्तक में संकलित बलिया के मेले के अवसर पर दिया गया भाषण किस शीर्षक से संग्रहीत है?
(i) भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है? (ii) महाकवि माघ का प्रभात वर्णन
(iii) भारतीय साहित्य की विशेषताएँ (iv) आचरण की सभ्यता।

130. 'मर्यादा' और 'टुडे' के सम्पादक थे—
(i) डॉ0 वासुदेवशरण अग्रवाल (ii) हरिशंकर परसाई
(iii) जैनेन्द्र कुमार (iv) डॉ0 सम्पूर्णानन्द।

131. किसका वास्तविक नाम केदार पाण्डेय था?
(i) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' (ii) जैनेन्द्र कुमार (iii) राहुल सांकृत्यायन (iv) मोहन राकेश।

132. राबर्ट नर्सिंग होम किस शहर में स्थित था?
(i) कानपुर (ii) इन्दौर (iii) नागपुर (iv) नयी दिल्ली।

133. 'सब रंग और कुछ राग' निबन्ध संग्रह के लेखक हैं—
(i) अज्ञेय (ii) जैनेन्द्र कुमार (iii) जी0 सुन्दर रेड्डी (iv) मोहन राकेश।

134. मथुरा के पुरातत्त्व संग्रहालय के अध्यक्ष पद पर कार्य करनेवाले निबन्धकार थे—
(i) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' (ii) रामवृक्ष बेनीपुरी (iii) सरदार पूर्णसिंह (iv) वासुदेवशरण अग्रवाल।

135. निम्नलिखित में से कौन ललित निबन्धकार माना जाता है?
(i) श्यामसुन्दर दास (ii) सरदार पूर्णसिंह (iii) कुबेरनाथ राय (iv) रामचन्द्र शुक्ल।

136. हिन्दी गद्य के उत्कर्ष का सूर्योदयकाल था— [2020 ZF]
(i) छायावादी युग (ii) द्विवेदी युग (iii) छायावादोत्तर युग (iv) भारतेन्दु युग।

137. 'संस्कृति के चार अध्याय' के लेखक हैं— [2017 ME]
(i) कन्हैयालाल मिश्र (ii) भगवतशरण उपाध्याय (iii) वासुदेवशरण अग्रवाल (iv) रामधारीसिंह 'दिनकर'।

138. आधुनिक गद्य का जनक कहा जाता है— [2016 SA, SG]
(i) महावीरप्रसाद द्विवेदी को (ii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को
(iii) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' को (iv) राय कृष्णदास को।

139. रेखाचित्र पर आधारित रचना है— [2016 SA]
(i) मुद्राराक्षस (ii) साहित्यालोचन (iii) अतीत के चलचित्र (iv) अन्तरिक्ष की यात्रा।

140. 'बेईमान की परत' के रचनाकार हैं— [2016 SA]
(i) कन्हैया लाल प्रभाकर (ii) हरिशंकर परसाई (iii) मोहन राकेश (iv) रामवृक्ष बेनीपुरी।

141. 'वर्ण रत्नाकर' के रचनाकार हैं—
(i) मथुरानाथ शुक्ल (ii) दौलतराम (iii) रामप्रसाद निरंजनी (iv) ज्योतिरीश्वर।

142. कल्प वृक्ष के रचनाकार हैं— [2020 ZC]
(i) हजारी प्रसाद द्विवेदी (ii) जैनेन्द्र कुमार (iii) वासुदेवशरण अग्रवाल (iv) अमृत राय।

143. 'ब्राह्मण' पत्रिका के सम्पादक हैं— [2017 MF, 19 CM, CP]
(i) प्रतापनारायण मिश्र (ii) बालकृष्ण भट्ट (iii) प्रेमचन्द (iv) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।

144. 'पाणिनिकालीन भारत' के लेखक हैं—
(i) हजारीप्रसाद द्विवेदी (ii) मोहन राकेश (iii) वासुदेवशरण अग्रवाल (iv) कन्हैयालाल मिश्र।

145. 'शिकायत मुझे भी है' किस विधा की रचना है?
(i) कहानी (ii) नाटक (iii) उपन्यास (iv) निबन्ध।

146. 'रानी केतकी की कहानी' के लेखक हैं– **[2017 MF]**
(i) सदासुख लाल (ii) राजा लक्ष्मण सिंह (iii) श्रद्धा राम फिल्लौरी (iv) इंशा अल्ला खाँ।

147. 'श्रीचन्द्रावली' नामक नाटक के लेखक हैं–
(i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ii) जयशंकर प्रसाद (iii) हरिकृष्ण प्रेमी (iv) श्रीनिवास दास।

148. सरदार पूर्णसिंह किस युग के लेखक हैं? **[2020 ZL]**
(i) भारतेन्दु युग (ii) द्विवेदी युग (iii) छायावाद युग (iv) प्रगतिवाद युग।

149. हिन्दी कहानी का जनक माना जाता है–
(i) किशोरीलाल गोस्वामी को (ii) विष्णु प्रभाकर को (iii) उदयशंकर भट्ट को (iv) डॉ रामकुमार वर्मा को।

150. हिन्दी साहित्य के आदिकाल के लिए 'सिद्ध सामन्तकाल' नाम दिया है–
(i) राहुल सांकृत्यायन ने (ii) रामचन्द्र शुक्ल ने (iii) रामकुमार वर्मा ने (iv) डॉ० नगेन्द्र ने।

151. 'पृथ्वीपुत्र' निबन्ध-संग्रह है–
अथवा 'पृथ्वीपुत्र' के रचनाकार हैं–
(i) जैनेन्द्र कुमार का (ii) वासुदेवशरण अग्रवाल का (iii) मोहन राकेश का (iv) अज्ञेय का।

152. 'लहरों के राजहंस' की विधा है–
(i) उपन्यास (ii) कहानी (iii) नाटक (iv) यात्रा वृत्तान्त।

153. किस कृति के रचनाकार हरिशंकर परसाई हैं?
(i) 'चंद छंद बरनन की महिमा (ii) 'कल्पलता'
(iii) 'साहित्य-सहचर' (iv) 'रानी नागफनी की कहानी'।

154. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की रचना है– **[2020 ZL]**
(i) चिन्तामणि (ii) परमेश्वर
(iii) कुटज (iv) चन्द्रकान्ता।

155. 'साहित्य और समाज' निबन्ध के लेखक हैं–
(i) कन्हैयालाल मिश्र (ii) डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी
(iii) प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी (iv) वासुदेवशरण अग्रवाल।

156. 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' किस विधा की रचना है?
(i) आत्मकथा की (ii) जीवनी की (iii) संस्मरण की (iv) रिपोर्ताज की।

157. वीरगाथाकाल की प्रमुख विशेषता है–
(i) नारी का रूप-सौन्दर्य चित्रण (ii) प्रकृति चित्रण
(iii) युद्धों का सजीव चित्रण (iv) मुक्तक काव्य रचना।

158. निम्नलिखित में से कौन प्रेमाश्रयी शाखा के कवि नहीं हैं?
(i) जायसी (ii) सूरदास (iii) मंझन (iv) कुतुबन।

159. 'लक्ष्मीपुरा' के लेखक हैं–
(i) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' (ii) रांगेय राघव (iii) शिवदान सिंह चौहान (iv) उपेन्द्रनाथ 'अश्क'।

160. 'शान्ति-निकेतन' में हिन्दी अध्यक्ष पद पर थे–
(i) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (ii) हजारीप्रसाद द्विवेदी (iii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (iv) बाबू गुलाब राय।

161. संस्मरण-विधा की रचना है–
(i) 'दीप जले शंख बजे' (ii) 'बाजे पायलिया के घुँघरू'
(iii) 'अरे! यायावर रहेगा याद' (iv) 'तब की बात और थी'।

162. 'कालिदास की लालित्ययोजना' के लेखक हैं–
(i) हरिशंकर परसाई (ii) मोहन राकेश
(iii) डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी (iv) महावीरप्रसाद द्विवेदी।

163. 'वारिस' कहानी-संग्रह है–
(i) कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर का (ii) प्रो0 जी सुन्दर रेड्डी का
(iii) 'अज्ञेय' का (iv) मोहन राकेश।

164. हरिशंकर परसाई की रचना है–
(i) 'कल्पवृक्ष' (ii) 'धरती के फूल' (iii) 'तब की बात और थी' (iv) 'मेरे विचार'।

165. 'भारत की मौलिक एकता' निबंध-संग्रह के लेखक हैं–
(i) रामधारीसिंह 'दिनकर' (ii) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
(iii) वासुदेवशरण अग्रवाल (iv) मोहन राकेश।

166. 'पुनर्नवा' कृति की विधा है–
(i) नाटक (ii) निबंध (iii) आत्मकथा (iv) उपन्यास।

167. 'अपने-अपने अजनबी' उपन्यास के लेखक हैं–
(i) हरिशंकर परसाई (ii) हजारीप्रसाद द्विवेदी (iii) अज्ञेय (iv) रामधारीसिंह 'दिनकर'।

168. मोहन राकेश का कहानी संग्रह है–
(i) समय-सारथी (ii) क्वार्टर (iii) आखिरी चट्टान तक (iv) बकलमखुद।

169. 'भाषा और आधुनिकता' निबंध के रचनाकार हैं– **[2020 ZN]**
(i) हरिशंकर परसाई (ii) वासुदेवशरण अग्रवाल (iii) मोहन राकेश (iv) प्रो0 जी0 सुन्दर रेड्डी।

170. 'सत्यार्थ प्रकाश' रचना का सम्बन्ध है–
(i) ब्रह्म समाज से (ii) आर्य समाज से (iii) प्रार्थना समाज से (iv) थियोसॉफिकल सोसाइटी से।

171. फणीश्वरनाथ 'रेणु' की कहानी है– **[2017 MA]**
(i) पान की बेगम (ii) विषकन्या (iii) पाजेब (iv) चीफ की दावत।

172. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' के लेखक हैं– **[2017 MB]**
(i) डॉ0 हजारीप्रसाद द्विवेदी (ii) हरिशंकर परसाई (iii) मोहन राकेश (iv) फणीश्वरनाथ 'रेणु'।

173. 'सरस्वती' पत्रिका का प्रकाशन-काल है– **[2017 MC]**
(i) 1868 ई0 (ii) 1900 ई0 (iii) 1880 ई0 (iv) 1870 ई0।

174. जैनेन्द्र की कहानी है– **[2017MM]**
(i) पान की बेगम (ii) खून का रिश्ता (iii) फाँसी (iv) अपने-अपने बच्चे।

175. 'परिवेश' निबन्ध-संग्रह है– **[2017 MB]**
(i) हरिशंकर परसाई (ii) जैनेन्द्र कुमार (iii) मोहन राकेश (iv) वासुदेवशरण अग्रवाल।

176. निन्दा रस के रचनाकार हैं– **[2020 ZB]**
(i) जैनेन्द्र कुमार (ii) हरिशंकर परसाई (iii) हजारी प्रसाद द्विवेदी (iv) मोहन राकेश।

177. 'कबीर वाणी के डिक्टेटर हैं' यह कथन है– **[2017 MC]**
(i) रामचन्द्र शुक्ल का (ii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का
(iii) आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी का (iv) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का।

178. 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' के लेखक हैं– **[2017 MD]**
(i) जयशंकर प्रसाद (ii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (iii) प्रेमचन्द (iv) मुंशी सदासुखलाल।

179. खड़ीबोली के 'लेखक चतुष्टय' उन्नायकों में नहीं हैं– **[2017 ME]**
(i) मुंशी सदासुखलाल (ii) इंशा अल्ला खाँ
(iii) राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिंद' (iv) सदल मिश्र।

180. हिन्दी में खड़ीबोली का जन्मदाता माना जाता है– **[2017 ME]**

(i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को (ii) प्रतापनारायण मिश्र को (iii) गुलाबराय को (iv) लाला लल्लूलाल को।

181. 'कितनी नावों में कितनी बार' कृति के रचनाकार हैं– **[2017 ME]**

(i) डॉ० धर्मवीर भारती (ii) अज्ञेय (iii) हरिवंशराय 'बच्चन' (iv) जयप्रकाश।

182. भारतेन्दु समकालीन लेखक हैं– **[2017 MG]**

(i) रायकृष्णदास (ii) शान्तिप्रिय द्विवेदी (iii) जैनेन्द्र कुमार (iv) ठाकुर जगमोहन सिंह।

183. 'सुखसागर' के रचनाकार हैं– **[2017 MG]**

(i) इंशा अल्ला खाँ (ii) लल्लूलाल (iii) मुंशी सदासुखलाल (iv) रामप्रसाद निरंजनी।

184. 'शृंगार रस मण्डन' के रचनाकार हैं–

(i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ii) महादेवी वर्मा (iii) गोसाईं बिट्ठलनाथ (iv) राधाचरण गोस्वामी।

185. 'कविवचन सुधा' के सम्पादक हैं– **[2019 CQ, 20 ZL]**

अथवा 'कविवचन सुधा' पत्रिका के सम्पादक रहे हैं– **[2019 CO]**

(i) बालकृष्ण भट्ट (ii) बालमुकुन्द (iii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (iv) पं० प्रताप नारायण मिश्र।

186. 'आखिरी चट्टान' रचना विधा है–

(i) निबन्ध संग्रह (ii) यात्रा विवरण (iii) उपन्यास (iv) कहानी संग्रह।

187. निबन्ध प्रौढ़तम स्तर तक पहुँचा–

(i) द्विवेदी युग में (ii) छायावादी युग में (iii) भारतेन्दु युग में (iv) छायावादोत्तर युग में।

188. 'हंस' पत्रिका के सम्पादक हैं– **[2016 SC, 18 AA]**

(i) गुलाबराय (ii) बालकृष्ट भट्ट (iii) प्रेमचन्द (iv) द्विजेन्द्र नाथ राय।

189. 'पैरों में पंख बाँधकर' के रचनाकार हैं– **[2019 CQ, 20 ZC]**

(i) रामवृक्ष बेनीपुरी (ii) हरिशंकर परसाई

(iii) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल (iv) डॉ० धर्मवीर भारती।

190. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' के रचनाकार हैं–

(i) मोहन राकेश (ii) धर्मवीर भारती (iii) अज्ञेय (iv) महादेवी वर्मा।

191. छायावादोत्तर काल की पत्रिका है– **[2018AA, 20 ZB]**

(i) सरस्वती (ii) प्रताप (iii) विशाल भारत (iv) कादम्बिनी।

192. भारतेन्दु युग के निबन्धकार हैं– **[2019 CM]**

(i) श्यामसुन्दर दास (ii) नंददुलारे वाजपेयी (iii) बालकृष्ण भट्ट (iv) रामचन्द्र शुक्ल।

193. द्विवेदी युग के लेखक नहीं हैं– **[2019 CM]**

(i) बालमुकुन्द गुप्त (ii) श्यामसुन्दर दास (iii) महावीरप्रसाद द्विवेदी (iv) डॉ० नागेन्द्र।

194. 'राजा भोज का सपना' के लेखक हैं– **[2019 CM]**

(i) शिवप्रसाद सितारे हिन्द (ii) किशोरी लाल गोस्वामी (iii) इंशा अल्ला खाँ (iv) राधारचरण गोस्वामी।

195. आलोचक के रूप में उल्लेखनीय कार्य करने वाले लेखक हैं– **[2019 CM]**

(i) वासुदेव शरण अग्रवाल (ii) रामकुमार वर्मा (iii) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (iv) डॉ० नागेन्द्र।

196. 'तूफानों के बीच' के रचनाकार हैं– **[2019 CN]**

(i) रांगेय राघव (ii) शिवदान सिंह चौहान (iii) शिवसागर मिश्र (iv) श्रीराम शर्मा।

197. 'त्यागपत्र' के रचनाकार हैं– **[2019 CN]**

(i) वासुदेवशरण अग्रवाल (ii) जैनेन्द्र कुमार (iii) भगवतीचरण वर्मा (iv) उपेन्द्रनाथ 'अश्क'।

198. 'गोरा बादल की कथा' के लेखक हैं– **[2017 MA, 19 CO]**
(i) सदासुख लाल (ii) जटमल (iii) राजा शिवप्रताप (iv) दौलतराम।

199. 'आवारा मसीहा' किस विधा की रचना है?
(i) जीवनी (ii) आत्मकथा (iii) रेखाचित्र (iv) संस्मरण।

200. 'सुनीता' उपन्यास के लेखक हैं– **[2019 CO]**
(i) प्रेमचन्द (ii) धर्मवीर भारती (iii) रामकुमार वर्मा (iv) जैनेन्द्र कुमार।

201. 'कला और संस्कृति' के लेखक हैं– **[2020 ZN]**
(i) हजारीप्रसाद द्विवेदी (ii) वासुदेवशरण अग्रवाल (iii) रामचन्द्र शुक्ल (iv) विद्यानिवास मिश्र।

202. 'पंचांग दर्शन' के रचनाकार हैं– **[2019 CP]**
(i) मथुरानाथ शुक्ल (ii) रामप्रसाद निरंजनी (iii) लल्लू लाल (iv) जटमल।

203. 'रानी नागफनी की कहानी' के लेखक हैं– **[2019 CP]**
(i) यशपाल (ii) महादेवी वर्मा (iii) जैनेन्द्र कुमार (iv) हरिशंकर परसाई।

204. 'सत्यार्थ प्रकाश' रचना है– **[2019 CP]**
(i) सदल मिश्र की (ii) राजा लक्ष्मण सिंह की (iii) स्वामी दयानन्द की (iv) वासुदेवशरण अग्रवाल की।

205. 'माधवविलास' के लेखक हैं– **[2019 CQ, 20 ZB]**
(i) राजा लक्ष्मणसिंह (ii) गोकुलनाथ (iii) लल्लू लाल (iv) सदासुख लाल।

206. 'अजातशत्रु' नाटक के रचनाकार हैं– **[2019 CQ]**
(i) जयशंकर प्रसाद (ii) लक्ष्मी नारायण मिश्र (iii) उपेन्द्र नाथ 'अश्क' (iv) डॉ० रामकुमार वर्मा।

207. 'परीक्षा गुरु' उपन्यास के लेखक हैं– **[2020 ZC]**
(i) इलाचन्द जोशी (ii) लाला श्रीनिवासदास (iii) यशपाल (iv) धर्मवीर भारती।

208. 'पैरों में पंख बाँधकर' रचना की विधा है– **[2019 CN]**
(i) जीवनी (ii) आत्मकथा (iii) संस्मरण (iv) यात्रावृत्त।

209. 'अपनी खबर' के लेखक हैं– **[2019 CR]**
(i) वियोगी हरि (ii) राहुल सांकृत्यायन (iii) बाबू गुलाब राय (iv) पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'।

210. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के रचनाकार हैं– **[2019 CR]**
(i) लक्ष्मीनारायण मिश्र (ii) रामकुमार वर्मा (iii) उपेन्द्रनाथ 'अश्क' (iv) जयशंकर प्रसाद।

211. 'कल्पलता' निबन्ध-संग्रह है– **[2020 ZJ]**
(i) हरिशंकर परसाई का (ii) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का
(iii) प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी का (iv) वासुदेवशरण अग्रवाल का।

212. कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' की 'बाजे पायलिया के घुँघरू' किस विधा की रचना है?
(i) संस्मरण (ii) ललित निबन्ध (iii) रेखाचित्र (iv) लघुकथा।

213. निम्न में से कौन हजारीप्रसाद द्विवेदी का उपन्यास नहीं है?
(i) 'चारुचन्द्र-लेख' (ii) 'पुनर्नवा' (iii) 'अनामदास का पोथा' (iv) 'तट की खोज'।

214. निम्न में से 'मेरे विचार' कृति के लेखक हैं–
(i) प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी (ii) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
(iii) अज्ञेय (iv) हरिशंकर परसाई।

215. 'शिक्षा का उद्देश्य' निबंध के लेखक हैं– **[2016 SF]**
(i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ii) सम्पूर्णानंद (iii) मोहन राकेश (iv) रायकृष्ण दास।

216. 'चन्द्रगुप्त' नाटक के लेखक हैं–
(i) रामकुमार वर्मा (ii) लक्ष्मी नारायण मिश्र (iii) जयशंकर प्रसाद (iv) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।

217. डॉ० वासुदेवशरण का निबन्ध-संग्रह है–
(i) माता भूमि (ii) शेष स्मृतियाँ (iii) विचार-प्रवाह (iv) रस-मीमांसा।

218. आलोचनात्मक कृति 'कालिदास की लालित्य योजना' के लेखक हैं–
(i) हरिशंकर परसाई (ii) मोहन राकेश
(iii) डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी (iv) सुदर्शन।

219. निम्नलिखित में से किस उपन्यास की रचना हरिशंकर परसाई द्वारा की गई है?
(i) पुनर्नवा (ii) निर्मला
(iii) रानी नागफनी की कहानी (iv) सुखदा।

220. 'दीप जले शंख बजे' विधा है–
(i) रेखाचित्र (ii) ललित निबन्ध (iii) यात्रावृत्तान्त (iv) संस्मरण।

221. 'संयोगिता स्वयंवर' किसकी रचना है–
(i) राधाकृष्ण दास (ii) लाला श्रीनिवास दास (iii) बालकृष्ण भट्ट (iv) श्रीनिवास दास।

222. 'इन्दुमती' कहानी के लेखक हैं–
(i) वृन्दावन लाल वर्मा (ii) किशोरीलाल गोस्वामी (iii) 'अज्ञेय' (iv) प्रेमचन्द।

223. 'स्कन्दगुप्त' नाटक के लेखक हैं–
(i) लक्ष्मीनारायण मिश्र (ii) जयशंकर प्रसाद (iii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (iv) प्रतापनारायण मिश्र।

224. 'मृगनयनी' उपन्यास के लेखक हैं–
(i) भगवतीचरण वर्मा (ii) वृन्दावनलाल वर्मा (iii) अमृत राय (iv) जैनेन्द्र कुमार।

225. 'विचार प्रवाह' के लेखक हैं–
(i) महावीरप्रसाद द्विवेदी (ii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (iii) हजारीप्रसाद द्विवेदी (iv) प्रतापनारायण मिश्र।

226. 'मैला आँचल' किसका उपन्यास है?
(i) वृन्दावन लाल वर्मा (ii) भगवतीचरण वर्मा (iii) फणीश्वरनाथ रेणु (iv) मुंशी प्रेमचन्द।

227. 'प्रताप' पत्रिका के सम्पादक हैं–
(i) महावीर प्रसाद द्विवेदी (ii) मुंशी प्रेमचन्द (iii) गणेश शंकर विद्यार्थी (iv) बदरीनारायण चौधरी।

228. हिन्दी एकांकी का जनक किसे माना जाता है?
(i) जयशंकर प्रसाद (ii) डॉ० रामकुमार वर्मा (iii) किशोरीलाल गोस्वामी (iv) राधाकृष्ण।

229. 'जनमेजय का नागयज्ञ' नाटक के रचनाकार हैं–
(i) हरिकृष्ण प्रेमी (ii) आचार्य चतुरसेनशास्त्री (iii) जयशंकर प्रसाद (iv) सेठ गोविन्ददास।

230. प्रेमचन्द का उपन्यास है–
(i) कंकाल (ii) तितली (iii) गोदान (iv) चित्रलेखा।

231. 'पागल पथिक' किस विधा की रचना है?
(i) कहानी (ii) नाटक (iii) गद्यगीत (iv) संस्मरण।

232. किशोरीलाल गोस्वामी की रचना है–
(i) इंदुमती (ii) नहुष (iii) आलोक पर्व (iv) अपनी खबर।

233. 'गोदान' के रचनाकार थे– **[2020 ZA]**
(i) मुंशी प्रेमचन्द (ii) जयशंकर प्रसाद (iii) जैनेन्द्र (iv) अमृत लाल नागर

234. 'कंकाल' के लेखक हैं– **[2020 ZA]**
(i) अज्ञेय (ii) मुंशी प्रेमचन्द (iii) जयशंकर प्रसाद (iv) जैनेन्द्र

235. 'बेइमान की परत' किस विधा की रचना है? [2020 ZA]
(i) कहानी (ii) निबन्ध (iii) नाटक (iv) यात्रा-वृत्तान्त

236. निम्न में से हरिशंकर परसाई का निबन्ध संग्रह है– [2020 ZN]
(i) विचार प्रवाह (ii) प्रस्तुत प्रश्न (iii) पृथिवी पुत्र (iv) तब की बात और थी

237. निम्न में से हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबन्ध संग्रह है–
(i) हिन्दी साहित्य की भूमिका (ii) आलोक पर्व (iii) साहित्य सहचर (iv) साहित्य का मर्म

238. हरिशंकर परसाई की 'जैसे उनके दिन फिरे' किस विधा की रचना है? [2020 ZJ]
(i) उपन्यास (ii) कहानी (iii) निबन्ध (iv) नाटक

239. वासुदेव अग्रवाल द्वारा लिखित कृति है? [2020 ZH]
(i) पुनर्नवा (ii) पृथिवी पुत्र (iii) आलोक पर्व (iv) धरम के फूल

240. निराला की साहित्य साधना के लेखक हैं– [2020 ZH]
(i) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (ii) महादेवी वर्मा (iii) कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर (iv) डॉ. राम विलास शर्मा

241. यशपाल कृत 'सिंहावलोकन' रचना किस विधा की है? [2020 ZH]
(i) आत्मकथा (ii) रेखाचित्र (iii) संस्मरण (iv) कहानी

242. श्री जी. सुन्दर रेड्डी लेखक हैं– [2020 ZH]
(i) सदाचार की ताबीज (ii) साहित्य का श्रेय और प्रेय (iii) मेरे विचार (iv) मंथन

243. निम्न में से कौन-सा जी. सुन्दर रेड्डी की रचना है? [2020 ZM]
(i) साहित्य और समाज (ii) मेरे विचार (iii) भारत की एकता (iv) वैचारिकी शोध और बोध

244. 'जैसे उनके दिन फिरे' निम्न में से किसका कहानी संग्रह है? [2020 ZM]
(i) फणीश्वर नाथ रेणु (ii) जैनेन्द्र कुमार (iii) अमरकान्त (iv) हरिशंकर परसाई

245. 'मेरे पिताजी' संस्मरण के लेखक हैं– [2020 ZM]
(i) कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर (ii) प्रो. जी. सुन्दर रेड्डी
(iii) हरिशंकर परसाई (iv) डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

246. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित साहित्य सहचर किस विधा की रचना है? [2020 ZM]
(i) निबन्ध (ii) आलोचना (iii) उपन्यास (iv) संस्मरण

247. 'भारत की एकता' के लेखक हैं– [2020 ZM]
(i) हरिशंकर परसाई (ii) वासुदेव शरण अग्रवाल (iii) प्रो. जी. सुन्दर रेड्डी (iv) डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी

अध्ययन-अध्यापन

प्रस्तुत पाठ्य-पुस्तक का प्रणयन अध्ययन-अध्यापन की नवीन पद्धति को ध्यान में रखते हुए किया गया है। हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त इण्टरमीडिएट स्तर पर छात्र किशोरावस्था में पदार्पण कर चुके होते हैं। किशोर की मानसिक दुनिया बहुरंगी होती है। उसमें आदर्शवादिता एवं कल्पनाशीलता भी प्रचुर मात्रा में होती है। अतः प्रस्तुत पाठ्य-पुस्तक में पाठों का चयन करते समय इस बात का ध्यान रखा गया है कि छात्र की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में विषय-वस्तु सहायक हो। पुस्तक में छात्रों की केवल रुचियों का ही ध्यान नहीं रखा गया है, वरन् उनकी रुचि के परिष्कार का भी लक्ष्य सामने रखा गया है।

प्रस्तुत संकलन में इस बात का प्रयास किया गया है कि गद्य के ऐतिहासिक विकास, उसकी विभिन्न शैलियों तथा उसकी विविध विधाओं से छात्र परिचित हो जायँ। यह कार्य गहन अध्ययन द्वारा संभव है। अतः इस पुस्तक को द्रुत पठन की पुस्तक की भाँति न पढ़ाकर विशद् एवं गहन अध्ययन की पुस्तक की भाँति पढ़ाया जाय, क्योंकि प्रत्येक पंक्ति अर्थ-बोध की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। अर्थ-बोध हमारे पढ़ाने का प्रथम मुख्य लक्ष्य होना चाहिए।

अर्थ-बोध छात्रों के पूर्व ज्ञान, शब्द-भण्डार एवं पढ़ने की गति पर प्रायः आधारित होता है। अर्थ-बोध की योग्यता का विकास करने के लिए कक्षा में छात्रों को जिन बातों का अभ्यास कराना आवश्यक है, उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं :

1. सारांश बताना।
2. अनुच्छेदों का शीर्षक देना।
3. सन्दर्भ द्वारा शब्दों के अर्थ का अनुमान कर लेना।
4. केन्द्रीय भाव ग्रहण कर लेना।
5. पठित सामग्री का मूल्यांकन करना।
6. शैली की विविधता को समझना।
7. वाक्यों में शब्दों के क्रम के महत्त्व को पहचानना।
8. लक्ष्यार्थ एवं व्यंग्यार्थ को समझना।
9. सुन्दर वाक्यों को कण्ठस्थ कर लेना।

अर्थ-बोध के अतिरिक्त कक्षा में पढ़ाने का दूसरा उद्देश्य शब्द-भण्डार की वृद्धि है। पढ़ाते समय पर्यायवाची, विलोम, अनेकार्थवाची एवं समानार्थी शब्दों का ज्ञान कराना आवश्यक है। शब्द-रचना से भी छात्रों को परिचित होना चाहिए। शब्द-भण्डार में वृद्धि की दृष्टि से कोश का प्रयोग आवश्यक है। इन क्रियाओं का अभ्यास कक्षा में कराना हितकर होगा।

प्रस्तुत संकलन के पाठों को पढ़ाने का तीसरा प्रमुख उद्देश्य पठन-गति का विकास करना है। इस स्तर पर सस्वर पठन की अपेक्षा मौन पठन का अधिक महत्त्व है, किन्तु दोनों प्रकार के वाचनों में गति के विकास का ध्यान रखना लाभप्रद होगा। यह गति अभ्यास पर निर्भर है, अतः कक्षा में पाठनाभ्यास आवश्यक है।

इण्टरमीडिएट के छात्रों को आलोचनात्मक चिन्तन की ओर भी उन्मुख होना है, अतः छात्रों में आलोचनात्मक दृष्टिकोण

का विकास करना अध्यापक का उद्देश्य होना चाहिए। निबंधों में आये हुए तथ्यों की तुलना करके उनकी तर्कसंगतता देखनी चाहिए। कारण-कार्य सम्बन्धों का विश्लेषण होना चाहिए। छात्रों को इस योग्य होना चाहिए कि वे पाठों को पढ़कर उनकी आलोचना स्वस्थ ढंग से कर सकें।

आलोचनात्मक चिन्तन के साथ-साथ छात्रों में रचनात्मक प्रवृत्ति के विकास का भी ध्यान रखना श्रेयस्कर होगा। छात्र यह देखें कि एक ही बात को विभिन्न शैलियों में किस प्रकार कहा जा सकता है। इस विशेषता को लक्षित करके उन्हें अपने स्वभाव एवं क्षमता के अनुकूल उपयुक्त शैली में भावाभिव्यक्ति का सफल प्रयत्न करना चाहिए, तभी वे आगे चलकर स्वयं भी साहित्य की श्रीवृद्धि करने में समर्थ हो सकेंगे। पढ़ाते समय अध्यापक को मनोविज्ञान के अधुनातन सिद्धान्तों का उपयोग करना चाहिए। अध्यापक को विभिन्न युक्तियों का प्रयोग करते समय यह देखना चाहिए कि वे विभिन्न युक्तियाँ साहित्यिक विधाओं के भी अनुकूल हों और छात्रों की मानसिक योग्यता, अभिरुचि एवं क्षमता के भी।

निबंधों को पढ़ाने में निबंध की विषय-वस्तु, प्रस्तुति एवं प्रयोजन पर दृष्टि रहनी चाहिए। निबंधों के विषय अनेक प्रकार के हैं। इनसे छात्रों का परिचय होना ही है। प्रस्तुतीकरण की शैली भिन्न-भिन्न है। शैली की भिन्नता प्रयोजन तथा विषय की भिन्नता के कारण है। छात्रों का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित करना है कि लेखक ने अपने आशय या प्रयोजन को व्यक्त करने के लिए किस प्रकार की शैली का चुनाव किया है और इस प्रकार की शैली किस तरह के विषयों के लिए उपयुक्त होती है।

गद्यकार का कौशल उसकी अभिव्यंजना-शैली में देखा जा सकता है। व्यंग्यकार प्रायः उर्दू शब्दावली अथवा तद्भव शब्दावली का प्रयोग करता है, जबकि गंभीर विचारों की अभिव्यक्ति करनेवाला निबंधकार प्रायः तत्सम पदावली की ओर उन्मुख हो जाता है। टकसाली शब्दों, मुहावरों एवं लोकोक्तियों के प्रयोग की ओर झुकाव कुछ गद्यकारों में विशेष रूप से दिखायी पड़ता है। छात्रों को इस योग्य होना चाहिए कि वे शब्दों के परे जाकर व्यंग्यार्थ की अनुभूति कर सकें। संकेतों को अच्छी तरह समझाना और लेखक के आशय को ग्रहण करना कठिन होता है और इसी कठिनाई पर विजय पाने के लिए कक्षा में पठन-पाठन की योजना बनायी जाती है।

गद्य-शिक्षण के समय अध्यापक को पाठ्य-बिन्दुओं का निश्चय पहले से ही कर लेना चाहिए। किन तथ्यों पर अधिक बल देना है और कौन-से स्थल अधिक महत्त्वपूर्ण हैं, किन वाक्यों की व्याख्या करना है, किन सन्दर्भों को देना है, इसका निश्चय प्रत्येक पाठ के शिक्षण के पूर्व ही कर लेना चाहिए। कक्षा में शिक्षण का आरम्भ चाहे जिस विधि से किया जाय, किन्तु इस बात का ध्यान रहे कि छात्र प्रारम्भ में ही लेखक से कुछ परिचित हो जायँ और नवीन विषयवस्तु को ग्रहण करने की मानसिक स्थिति में वे आ जायँ। अनुभवों एवं पूर्व अर्जित ज्ञान का भरपूर उपयोग किया जाय। निबंध पाठों के अध्ययन-अध्यापन के समय केवल परीक्षा को ही दृष्टि में रखना गद्य-शिक्षण का उद्देश्य नहीं है। परीक्षा को गौण समझा जाना चाहिए और निबंधों की विशेषताओं से परिचय प्राप्त करके अपनी शैली में परिमार्जन करने को प्रमुखता दी जानी चाहिए।

गद्य-शिक्षण में प्रत्येक पाठ के शिक्षण की विधि एक ही यांत्रिक ढंग से नहीं होनी चाहिए। जिस विधि से समीक्षात्मक पाठ पढ़ाया जायेगा, उसी विधि से भावात्मक निबंध नहीं पढ़ाया जा सकता। रेखाचित्र, संस्मरण एवं रिपोर्ताज के पढ़ाने का ढंग अलग होगा। किसी निबंध को पढ़ाने में तथ्यों एवं घटनाओं की ओर छात्र का ध्यान आकृष्ट किया जायेगा तो किसी अन्य में मनोभावों एवं शैलीगत विशेषताओं को प्रमुखता दी जायेगी। पाठ को पढ़ाने में मौन पाठ का सर्वाधिक महत्त्व होगा तो किसी अन्य में सस्वर पठन का भी उपयोग किया जा सकता है।

वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लेने के अवसर पर, विद्यालयीय पत्रिका हेतु लेख लिखने अथवा किसी आयोजन पर भाषण देने के अवसर पर किसी गद्यकार की शैली के अनुकरण के लिए छात्रों को प्रेरित किया जा सकता है।

●●